॥ रुद्राष्टाध्यायी ॥

॥ विषय अनुक्रमाणिका ॥

1.	**अभिषेक विधि**		**02**
2.	**शिववास**		**03**
3.	**रुद्राभिषेक में प्रयुक्त होनेवाले द्रव्य**		**04**
4.	**शिव पूजन विधि प्रारम्भ**		**05**
5.	**स्वस्ति वाचन**		**05**
6.	**संकल्प**		**07**
7.	**कलश स्थापनम्**		**09**
8.	**गणेश अम्बिका पूजनम्**		**11**
9.	**षोडश मातृका पूजनम्**		**12**
10.	**सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम्**		**12**
11.	**वास्तु पीठ पूजनम्**		**13**
12.	**चतु:षष्ठि योगिनी पूजनम्**		**14**
13.	**क्षेत्रपाल पूजनम्**		**15**
14.	**नवग्रह स्थापनम्** (अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, दशदिकपाल, पंचलोकपाल)		**16**
15.	**सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्**		**22**
16.	**पार्षद पूजनम्**		**23**
17.	**शिव पूजनम्**		**24**
18.	**अंगपूजा, अष्टपूजा, गणपूजा**		**31**
19.	**अष्टोत्तरशत शिव नामावली**		**32**
20.	**पंचवक्त्र पूजनम्**		**33**
21.	**रुद्राष्टाध्यायी**		**35**
	षडंग्नायस	६ श्लोक	**35**
	प्रथम अध्याय	१० श्लोक	**36**
	द्वितीय अध्याय	२२ श्लोक	37
	तृतीय अध्याय	१७ श्लोक	39
	चतुर्थ अध्याय	१७ श्लोक	40
	पंचम अध्याय	६६ श्लोक	42
	षष्ठ अध्याय	८ श्लोक	48
	सप्तम अध्याय	७ श्लोक	49
	अष्टम् अध्याय	२९ श्लोक	50
	नवम् अध्याय	२४ श्लोक	54
	दशम् अध्याय	१३ श्लोक	56
22.	**उत्तर पूजनम्**		**57**
23.	**आरती**		**57**
24.	**पूष्पांजलि**		**58**
25.	**प्रदक्षिणा**		**58**
26.	**आचार्य दक्षिणा**		**59**
27.	**अभिषेक**		**59**
28.	**विसर्जन**		**59**
29.	**आशिर्वाद**		**60**
30.	**रुद्रयाग हवन मन्त्र**		**61**

सर्वदेवात्मको रुद्र: सर्वे देवा: शिवात्मका: रूद्रहृदयोपनिषद में शिव के बारे में कहा गया है कि सभी देवताओं की आत्मा में रूद्र उपस्थित हैं और सभी देवता रूद्र की आत्मा हैं।

रुतम्-दु:खम्, द्रावयति-नाशयतीति रुद्र: रुद्राष्टाध्यायी के अनुसार शिव ही रूद्र हैं और रुद्र ही शिव है। अर्थात रूद्र रूप में प्रतिष्ठित शिव हमारे सभी दु:खों को शीघ्र ही समाप्त कर देते हैं।

- **रुद्रपाठ के भेद (अभिषेक विधि)**
  - निम्न अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा हवनात्मक तीनों प्रकार से किये जा सकते हैं।
  - **रूपक या षडंगपाठ** रुद्राष्टाध्यायी में कुल दस अध्याय हैं किन्तु नाम अष्टाध्यायी ही क्योंकि इसके आठ अध्यायों में भगवन शिव की महिमा व कृपा शक्ति का वर्णन है। शेष दो अध्याय शांत्यधाय और स्वस्ति प्रार्थनाध्याय के नाम से जाना जाता है। रुद्राभिषेक करते हुए इन सम्पूर्ण 10 अध्यायों का पाठ रूपक या षडंग पाठ कहा जाता है।
  - **रुद्री या एकादशिनि** अभिषेक करते समय रुद्र के षडंग पाठ में पांचवें और आठवें अध्याय के नमक चमक पाठ विधि यानि ग्यारह पुनरावृति पाठ को एकादशिनि रुद्री पाठ कहते हैं। यह एक अथवा ग्यारह लोग करें, तब भी चलता है।
  - **लघुरुद्र** ग्यारह ब्राह्मण रुद्रके ग्यारह आवर्तन करें तो उसे लघुरुद्र कहते हैं। लघुरुद्र में रुद्र के १२१ आवर्तन होते हैं।
  - **महारुद्र** लघुरूद्र की ग्यारह आवृत्ति पाठ को महारूद्र कहा जाता है। महारुद्र में रुद्र के १३३१ आवर्तन होते हैं।
  - **अतिरुद्र** महारुद्र की ग्यारह आवृति पाठ को अतिरुद्र कहा जाता है। अतिरुद्र में रुद्र के १४६४१ आवर्तन होते हैं।
- **रूद्राभिषेक हेतु वेदी** यदि आप रूद्राभिषेक, लघुरूद्र, महारूद्र आदि विशेष अनुष्ठान कर रहे हैं, तब गणेश, नवग्रह मण्डल, कलश, षोडस मात्रिका, वास्तु मण्डल, क्षेत्रपाल मण्डल, चर्तुलिंगतोभद्र मण्डल, शिव परिवार, पंचांग मण्डल आदि इन मण्डलों पर देवताओं का ध्यान, आवाहन, पूजन करके जप यज्ञ अभिषेक सम्पन्न कराया जाता है।
- **रुद्राभिषेक हेतु मुहुर्त** रुद्राभिषेक विशेष मुहुर्त में तथा तीर्थ स्थान में करवाने से अत्यधिक शुभ फल देने वाला होता है, इस पूजन से कालसर्प योग, गृहकलेश, व्यापार में नुकसान, शिक्षा में रुकावट, राहु, शनि की दशा, अशुभ गोचर, नाडी दोष, सर्प दोष, मंगल दोष, कलत्र दोष, विष दोष, केमद्रुम दोष इत्यादी सभी कार्यों के लिये रुद्राभिषेक अभीष्ट सिद्धि दायक है।

॥ शिववास ॥

- किसी कामना से किए जाने वाले रुद्राभिषेक में शिव-वास का विचार करने पर अनुष्ठान अवश्य सफल होता है।
- ज्योर्तिलिंग-क्षेत्र एवं तीर्थस्थान में तथा शिवरात्रि-प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वो में शिव-वास का विचार किए बिना भी रुद्राभिषेक किया जा सकता है।

- **तिथिं च द्विगुणी कृत्वा, पुनः पञ्च समन्वितम् ।**
  मुनिभिस्तु हरेदभागं शेषं च शिववासनम् ॥ ॥ १ ॥
- **एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ ।**
  तृतीये वृषभारुढ़ः सभायां च चतुर्थके ॥ ॥ २ ॥
- **पंचमे भोजने चैव क्रीड़ायां च रसात्मके ।**
  श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः उदीरितः ॥ ॥ ३ ॥
- **कैलाशे लभते सौख्यं गौर्य्या च सुख सम्पदौ ।**
  वृषभेभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायांतापकारकौ ॥ ॥ ४ ॥
- **भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च ।**
  श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत् ॥ ॥ ५ ॥

॥ शिववास चक्रम् ॥

कृष्ण पक्ष तिथियाँ	शुक्ल पक्ष तिथियाँ	शिववास	फल
1, 8, 30	2, 9	गौरी सानिध्य	सुख, सम्पदा
2, 9	3, 10	सभा	ताप
3, 10	4, 11	क्रीड़ा	कष्ट
4, 11	5, 12	कैलास	सुख
5, 12	6, 13	बृषभ आरुढ़	अभीष्ट सिद्धि
6, 13	7, 14	भोजन	पीड़ा
7, 14	1, 8, 15	श्मशान	मरण

- **रुद्राभिषेक में प्रयुक्त होनेवाले प्रशस्त द्रव्य** (शिव पुराण अनुसार)
  - **जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशांत्यै कुशोदकै, दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च। मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थ वारिणा, पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात ॥**
  - **बन्ध्या वा काकबंध्या वा मृतवत्सा यांगना, सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ॥ ज्वर प्रकोप शांत्यर्थम् जलधारा शिवप्रिया ॥**
  - **घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्र सहस्त्रकम्, तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥**
  - **प्रमेह रोग शांत्यर्थम् प्राप्नुयान् मान सेप्सितम, केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥**
  - **शर्करा मिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्, श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥**
  - **सार्षपेनैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह, मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिव पूजनात् ॥**
  - **पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा, जीवनार्थी तू पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥**
  - **पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेतिछवं तथा, महलिंगाभिषेकेन सुप्रीतः शंकरो मुदा ॥**
  - **कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेद्विनिर्मितम्।**

अभिषेक	फल (लाभ)
जल से	वृष्टि हेतु।
कुशा एवं जल से	रोग, दुःख से छुटकारा हेतु।
दही से	पशु, भवन तथा वाहन की प्राप्ति हेतु।
गन्ने के रस से	लक्ष्मी प्राप्ति एवं सुख और आनंद हेतु।
मधु युक्त जल से	धन वृद्धि हेतु।
तीर्थ जल से	मोक्ष की प्राप्ति हेतु।
इत्र जल से	भौतिक सुखों एवं बीमारी नष्ट हेतु।
दुध से	पुत्र प्राप्ति, प्रमेह रोग की शान्ति तथा मनोकामनाएं पूर्ण हेतु।
गंगाजल से	चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति एवं ज्वर ठीक हेतु।
शर्करा से	सद्बुद्धि हेतु।
घी से	वंश का विस्तार हेतु।
सरसों के तेल से	रोग तथा शत्रु का नाश हेतु।
मधु से	बीमारियों से छुटकारा एवं पाप क्षय हेतु।
फलों के रस	अखंड धन लाभ व हर तरह के कर्ज से मुक्ति।
चने की दाल	किसी भी शुभ कार्य के आरंभ होने व कार्य में उन्नति के लिए।
काले तिल	तंत्र बाधा नाश हेतु व बुरी नजर से बचाव के लिए।
मधु गंगा जल	संतान प्राप्ति व पारिवारिक सुख-शांति हेतु।
कुंकुम, केसर, हल्दी	आकर्षक व्यक्तित्व का प्राप्ति हेतु।

॥ शिव पूजन विधि प्रारम्भ ॥

- पवित्रकरणम्

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

- आचम्य

ॐ केशवाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ नारायणाय नम: आचमन करें
ॐ हृषीकेशाय नम: हाथ धो लें

- आसन शुद्धि

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- पवित्र धारणम्

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूने तच्छकेयम् ॥

- यज्ञोपवित

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेज: ॥

- शिखाबन्धन

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

- तिलक / चन्दन

चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥

- ॐ आदित्या वसो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणा: ।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥

- रक्षाबन्धनम्

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

- स्वस्ति-वाचन

आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिद: ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॥ १ ॥

- देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ꣳ राति रभिनो निवर्तताम् ।
देवाना ꣳ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयु: प्रतिरन्तु जीवसे ॥ ॥ २ ॥

- तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ꣳ सोम मश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥

- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
  तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥
- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
  पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॥ ५ ॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
  स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥ ६ ॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
  अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ॥ ७ ॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॥ ८ ॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
  पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥ ॥ ९ ॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
  विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
  शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः
  शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
  शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॥१२॥
- सुमुखश्चै कदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ॥ १ ॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ॥ २ ॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ॥ ३ ॥
- शुक्लाम्बर धरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ॥ ४ ॥

- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
  सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॥ ५ ॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ॥ ६ ॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥ ॥ ७ ॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥ ॥ ८ ॥
- वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ ॥ ९ ॥

ॐ श्रीमन महागणाधीपतये नमः, इष्ट देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः, लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः, उमा महेश्वराभ्याम नमः, शची पुरंदराभ्याम नमः, मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- **संकल्प** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे वा ग्रामे, बौद्धावतारे अमुक शालीवाहन शके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, अमुकायने, मासानां मासोत्तमे मासे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (गोत्र का नाम लें) अमुकनामाः (अपना नाम लें) ममात्मनः सर्वारिष्ट निरसन पूर्वक सर्वपापक्षयार्थं मनसेप्सित फल प्राप्ति पूर्वक श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं दीर्घ आयु आरोग्य एश्वर्य आदि वृद्ध्यर्थं पुत्र पौत्र धन धान्यादि समृद्ध्यर्थे श्री साम्ब सदा शिव प्रीत्यर्थञ्च अमुक लिंगोपरि यथोपचारैः श्री साम्ब सदा शिव पूजन पूर्वकं जलधारया षडंगरुद्रेण / रुद्रैकादशिन्या / लघुरुद्रेण रुद्राभिषेकं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये / करिष्ये ।
  - तत्रादौ कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेश अम्बिकयोः पूजनं करिष्ये ।

- पृथ्वी ध्यानम्

  ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- रक्षा विधानम्

  अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
  ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
  - अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतोदिशम् ।
    सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥

- दिप ध्यानम्

  दीपज्योति: परब्रह्म: दीपज्योति: जनार्दन: ।
  दीपोहरतिमे पापं दीपज्योतिर् नामोस्तुते ॥

- सूर्य ध्यानम्

  आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश्शयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
  हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

- शंख ध्यानम्

  त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करें ।
  निर्मित: सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥

- घंटी ध्यानम्

  आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
  घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ॥

॥ कलश स्थापनम् ॥

- भूमि स्पर्श — ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं माहि ँ सीः ॥
- गौरी स्पर्श — ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
  ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥
- गणपति स्पर्श — ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे,
  निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे, वसोः मम आहमजानि गर्भधम्
  मात्वमजासि गर्भधम् ॥
- सप्तधान्य — ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा।
  दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः
  प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥
- कलश स्पर्श — ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः।
  सहस्रं धुक्ष्वोरु धारा पयस्वतिः पुनर्म्मा विशताद्रयिः॥
- कलश में जल छोडें — ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुण्स्य ऽऋत
  सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद् ॥
- कलश में कुशा छोडें — ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य
  रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥
- कलश मे गन्ध छोडें — ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
  त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥
- कलश में औषधी — ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।
  मनैनु बब्भ्रूणावह ँ शतं धामानि सप्त च ॥
- कलश में दूर्वा छोडें — ॐ काण्डात काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
- कलश में आम्रपता — ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
  गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

- कलश में सप्तमृत्तिका — ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥
- कलश में सुपारी — ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥
- कलश में सूत्र लपेटे — ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्मवरूथमासदत्स्वः।
  वासोअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो ॥
- कलश में द्रव्य छोडें — ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत।
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
- कलश पर प्याला रखें — ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
  वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो ॥
- कलश पर दीपक रखें — ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
  अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
  ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥
- कलश आवाहन — ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समा न आयुः प्र मोषीः॥
  - कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्र समाश्रिताः।
    मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र गणा स्मृताः ॥
  - कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्विपा वसुंधरा।
    ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामवेदो अथर्वणाः ॥
  - अङैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
    अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
  - आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः,
    गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
    नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥
  - अस्मिन कलशे वरुणं सांङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।
  - ॐ भूभुर्वः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण,
  - ॐ अपां पतये वरुणाय नमः।

॥ गौरी - गणपति पूजन ॥

- गणेश ध्यानम्

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥

- गौरी ध्यानम्

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।
ससत्स्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

॥ षोडश मातृका पूजनम् ॥

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १७
ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३
ॐ देवसायै नमः ९
ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६
ॐ मातृभ्यो नमः १२
ॐ जयायै नमः ८
ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५
ॐ स्वाहायै नमः ११
ॐ विजयायै नमः ७
ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४
ॐ स्वधायै नमः ११
ॐ सावित्र्यै नमः ७
ॐ गौर्यै नमः २
ॐ गणेशाय नमः १

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

1. गणेश गौरी
2. पद्मा
3. शची
4. मेधा
5. सावित्री
6. विजया
7. जया
8. देव सेना
9. स्वधा
10. स्वाहा
11. मातरः
12. लोकमातरः
13. धृतिः
14. पुष्टिः
15. तुष्टिः
16. आत्मनः कुलदेवताः

- ॐ भूर्भुवः स्वः षोडश मातृका मण्डल देवताभ्यो नमः । आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

॥ सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम् ॥

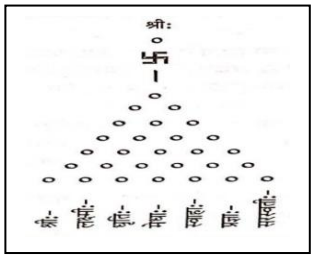

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माग्ङल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

1. श्रीयम्
2. लक्ष्मीम्
3. धृतिम्
4. मेधाम्
5. स्वाहाम्
6. प्रज्ञाम्
7. सरस्वतीम्

- ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृत मातृका मण्डल देवताभ्यो नमः । आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

॥ गृह शिख्यादि वास्तु मण्डल पूजनम् ॥

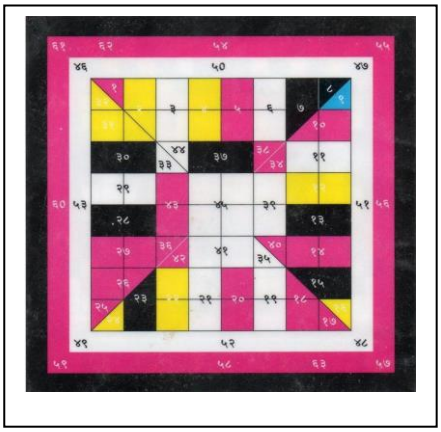

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

१. ॐ शिख्यै नमः	१७. पितृभ्यो नमः	३३. अद्भ्यो नमः	४९. पापराक्षस्यै नमः
२. पर्जन्यै नमः	१८. दौवारिकाय नमः	३४. आपवत्साय नमः	५०. स्कंदाय नमः
३. जयंताय नमः	१९. सुग्रीवाय नमः	३५. अर्यम्णे नमः	५१. अर्यम्णं नमः
४. इंद्राय नमः	२०. पुष्पदंताय नमः	३६. सावित्राय नमः	५२. जृंभकाय नमः
५. सूर्याय नमः	२१. वरुणाय नमः	३७. सवित्रे नमः	५३. पिलिपिच्छाय नमः
६. सत्याय नमः	२२. असुराय नमः	३८. विवस्वते नमः	५४. इंद्राय नमः
७. भृशाय नमः	२३. शेषाय नमः	३९. बिबुधाधिपाय नमः	५५. अग्नये नमः
८. अन्तरिक्षाय नमः	२४. पापाय नमः	४०. जयन्ताय नमः	५६. यमाय नमः
९. वायवे नमः	२५. रोगाय नमः	४१. मित्राय नमः	५७. निर्ऋतये नमः
१०. पूष्णे नमः	२६. नागाय नमः	४२. राजयक्ष्मणे नमः	५८. वरुणाय नमः
११. वितथाय नमः	२७. मुख्याय नमः	४३. रुद्राय नमः	५९. वायवे नमः
१२. गृहक्षताय नमः	२८. भल्लाटाय नमः	४४. पृथ्वीधराय नमः	६०. कुबेराय नमः
१३. यमाय नमः	२९. सोमाय नमः	४५. ब्रह्मणे नमः	६१. शंकराय नमः
१४. गन्धर्वाय नमः	३०. उरगाय नमः	४६. चरक्यै नमः	६२. ईशानाय नमः
१५. भृंगराजाय नमः	३१. अदितये नमः	४७. विदार्यै नमः	६३. ब्रह्मणे नमः
१६. मृगाय नमः	३२. दितये नमः	४८. पूतनायै नमः	६४. अंनताय नमः

- ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि मण्डल देवता सहित वास्तुपूरुषाय नमः। आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

॥ चतु:षष्ठि योगिनी मण्डलम् पुजनम् ॥

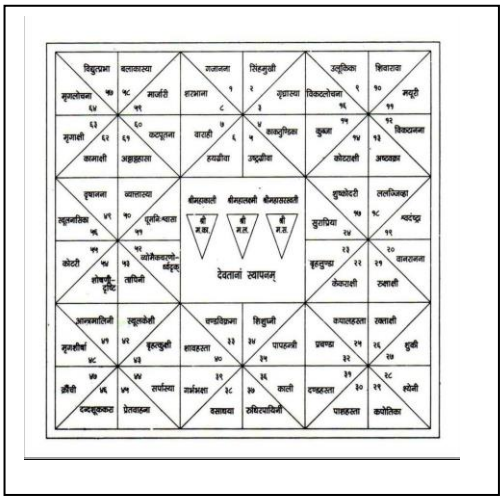

महाकाल्यै नम:

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

महालक्ष्म्यै नम:

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम । ईष्णन्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण ॥

महा सरस्वत्यै नम:

ॐ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसु:॥

- **ध्यानम्** ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ।
योगाभ्यासेन सतुष्टा परं ध्यान समन्विता ॥

१. ॐ गजाननायै नम:	१७. शुष्कोदर्यै नम:	३३. चण्ड-विक्रमायै नम:	४९. वृषाननायै नम:
२. सिंह मुख्यै नम:	१८. ललज्जिह्वायै नम:	३४. शिशुघ्न्यै नम:	५०. व्यात्तास्यायै नम:
३. गृध्रास्यै नम:	१९. श्व-दंष्ट्रायै नम:	३५. पाश-हन्त्र्यै नम:	५१. धूमनि: श्वासायै नम:
४. काक-तुण्डिकायै नम:	२०. वानराननायै नम:	३६. काल्यै नम:	५२. व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नम:
५. उष्ट्रगीवायै नम:	२१. रुक्षाक्ष्यै नम:	३७. रुधिर-पायिन्यै नम:	५३. तापिन्यै नम:
६. हय-ग्रीवायै नम:	२२. केकराक्ष्यै नम:	३८. वसा-धयायै नम:	५४. शोषणीदृष्टयै नम:
७. वाराह्यै नम:	२३. बृहत्-तुण्डायै नम:	३९. गर्भ-भक्षायै नम:	५५. कोटर्यै नम:
८. शिरभाननायै नम:	२४. सुरा-प्रियायै नम:	४०. शव-हस्तायै नम:	५६. स्थूल-नासिकायै नम:
९. उलूकिकायै नम:	२५. कपाल-हस्तायै नम:	४१. आन्त्र-मालिन्यै नम:	५७. विद्युत्प्रभायै नम:
१०. शिवारावायै नम:	२६. रक्ताक्ष्यै नम:	४२. स्थूल-केश्यै नम:	५८. बलाकास्यायै नम:
११. मायूर्यै नम:	२७. शुक्यै नम:	४३. बृहत्-कुक्ष्यै नम:	५९. मार्जार्यै नम:
१२. विकटाननायै नम:	२८. श्येन्यै नम:	४४. सर्पास्यायै नम:	६०. कट-पूतनायै नम:
१३. अष्ट-वक्त्रायै नम:	२९. कपोतिकायै नम:	४५. प्रेत-वाहनायै नम:	६१. अट्टाट्टहासायै नम:
१४. कोटराक्ष्यै नम:	३०. पाश-हस्तायै नम:	४६. दन्द-शूक-करायै नम:	६२. कामाक्ष्यै नम:
१५. कुब्जायै नम:	३१. दण्ड-हस्तायै नम:	४७. क्रौञ्च्यै नम:	६३. मृगाक्ष्यै नम:
१६. विकटलोचनायै नम:	३२. प्रचण्डायै नम:	४८. मृग-शीर्षायै नम:	६४. मृगलोचनायै नम:

- ॐ भूभुर्व: स्व: चतु:षष्ठि योगिनी मण्डल देवताभ्यो नम: । आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

॥ क्षेत्रपाल मण्डल देवतानां पूजनम् ॥

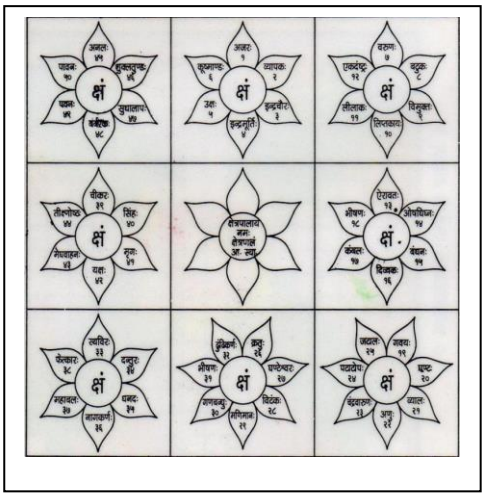

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।
ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः ॥

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ती शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम् ॥

दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः
२. अजराय नमः
३. व्यापकाय नमः
४. इन्द्रचौराय नमः
५. इन्द्रमूर्तये नमः
६. उक्षाय नमः
७. कूष्माण्डाय नमः
८. वरुणाय नमः
९. बटुकाय नमः
१०. विमुक्ताय नमः
११. लिप्तकायाय नमः
१२. लीलाकाय नमः
१३. एकदंष्ट्राय नमः
१४. ऐरावताय नमः
१५. ओषधिघ्नाय नमः
१६. बन्धनाय नमः
१७. दिव्यकाय नमः
१८. कम्बलाय नमः
१९. भीषणाय नमः
२०. गवयाय नमः
२१. घण्टाय नमः
२२. व्यालाय नमः
२३. अणवे नमः
२४. चन्द्रवारुणाय नमः
२५. पटाटोपाय नमः
२६. जटालाय नमः
२७. क्रतवे नमः
२८. घण्टेश्वराय नमः
२९. विटंकाय नमः
३०. मणिमानाय नमः
३१. गणबन्धवे नमः
३२. डामराय नमः
३३. ढुण्ढिकर्णाय नमः
३४. स्थविराय नमः
३५. दन्तुराय नमः
३६. धनदाय नमः
३७. नागकर्णाय नमः
३८. महाबलाय नमः
३९. फेत्काराय नमः
४०. चीकराय नमः
४१. सिंहाय नमः
४२. मृगाय नमः
४३. यक्षाय नमः
४४. मेघवाहनाय नमः
४५. तीक्ष्णोष्ठाय नमः
४६. अनलाय नमः
४७. शुक्लतुण्डाय नमः
४८. सुधालापाय नमः
४९. बर्बरकाय नमः
५०. पवनाय नमः
५१. पावनाय नमः

- ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल मण्डल देवताभ्यो नमः। क्षेत्रपालम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥

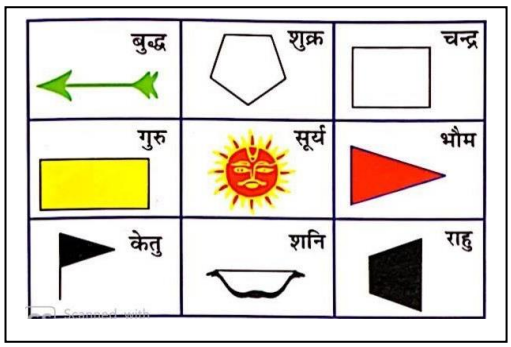

ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥

१. सूर्यम् मण्डल के मध्य में लकडी - मदार फल - द्राक्ष

- **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
- **जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।**
  तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपस गोत्र रक्त वर्ण भो सूर्य।
इहागच्छ। इहतिष्ठ सूर्याय नमः। सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

२. चन्द्रम् मण्डल के अग्निकोण में लकडी - पलास फल - गन्ना

- **ॐ इमं देवाऽअसपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥**
- **दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।**
  नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयस गोत्र शुक्ल वर्ण भो चन्द्र।
  इहागच्छ। इहतिष्ठ चन्द्रमसे नमः। चन्द्रमसम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

३. भौमम् मण्डल के दक्षिण में लकडी - खैर फल - सोपारी

- **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥**
- **धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।**

कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजस गोत्र रक्त वर्ण भो भौम।
इहागच्छ। इहतिष्ठ भौमाय नमः। भौमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

४. बुधम् मण्डल के ईशान कोण में लकडी - चिचडी फल - नारंगी

- **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथा मयं च।**
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥
- **प्रियंगु कलिका श्यामं रुपेण प्रतिमं बुधम्।**
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयस गोत्र हरित वर्ण भो बुध।
इहागच्छ। इहतिष्ठ बुधाय नमः। बुधम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. बृहस्पतिम् मण्डल के उत्तर में लकडी - पीपल फल - निम्बु

- **ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।**
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
- **देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।**
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव अंगिरस गोत्र पीत वर्ण भो बृहस्पते।
इहागच्छ। इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः। बृहस्मतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

६. शुक्रम् मण्डल के पूर्व में लकडी - गूलर फल - बीजोरु

- **ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः।**
ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु ॥
- **हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।**
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवस गोत्र शुक्ल वर्ण भो शुक्र।
इहागच्छ। इहतिष्ठ शुक्राय नमः। शुक्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

७. शनिम् मण्डल के पश्चिम में लकडी - शमी फल - कमल गट्टा

- **ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः ॥**
- **नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।**
छाया मार्तण्ड संभूतं तन्नमामि शनैश्चरम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपस गोत्र कृष्ण वर्ण भो शनैश्चर।

इहागच्छ। इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः। शनैश्चरम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि

८. **राहुम्** मण्डल के नैर्ऋत्य कोण में लकडी – दुब फल - नारियल

- **ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥**
- **अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।**
  सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठीनस गोत्र कृष्ण वर्ण भो राहो।
  इहागच्छ। इहतिष्ठ राहवे नमः। राहुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

९. **केतुम्** मण्डल के वायव्य कोण में लकडी - कुशा फल - दाडिम

- **ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥**
- **पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।**
  रौद्रं रौद्रत्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्ण वर्ण भो केतु।
  इहागच्छ। इहतिष्ठ केतवे नमः। केतुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- अधिदेवता स्थापनम् विशेष पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान, इत्यादि में नवग्रहों की स्थापना के उपरान्त सूर्य आदि ग्रहों

  के दाहिने (दक्षिण / दायें) की तरफ अधिदेवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें।

१. ईश्वरम् (सूर्य के) **ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्।**
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

२. उमाम् (चंद्र के) **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रो पार्श्व नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥

३. स्कन्दम् (मंगल के) **ॐ यद क्रन्दः प्रथमं जायमानः उद्यन्तसमुद्रा दुत वा पुरीषात्।**
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन॥

४. विष्णुम् (बुध के) **ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप् त्रेस्थो विष्णोः**
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

५. ब्रह्माणम् (गुरु के) **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।**
सबुध्न्या उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसश्च विवः॥

६. इन्द्रम् (शुक्र के) **ॐ सजोष इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्राहा शूर विद्वान्।**

जहि शत्रु२रप मृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः ॥

७. यमम् (शनि के) ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥

८. कालम् (राहु के) ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि ।
समापो ऽ अद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः ॥

९. चित्रगुप्तम् (केतु के) ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥

- प्रत्यधि देवता स्थामनम् नवग्रह मण्डल पर अधिदेवताओं की स्थापना के उपरान्त बायें तरफ प्रत्यधि देवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें ।

१. अग्निम् (सूर्य के) ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमु प ब्रुवे ।
देवाँ २ ऽआसादयादिह ॥

२. आपः (चन्द्र के) ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे यो वः
शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽ अरङ्गमामवो
यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ॥

३. पृथ्वीम् (मंगल के) ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥

४. विष्णुम् (बुध के) ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥

५. इन्द्रम् (गुरु के) ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

६. इन्द्राणीम् (शुक्र के) ॐ अदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या ऽउष्णीषः ।
पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥

७. प्रजापतिम् (शनि के) ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥

८. सर्प (राहु के) ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

९. ब्रह्मा (केतु के) ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः ।

सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

- **पंच लोकपाल देवता पूजनम्**

१. गणेश (राहु के उत्तर) ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपति ꣳ हवामहे
निधी नान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे
व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं ॥

२. दुर्गा (शनि के उत्तर) ॐ अंबेऽ अंबिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

३. वायु (सूर्य के उत्तर) ॐ आ नो नियुद्भिःशतिनीभिरध्वर ꣳ सहश्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

४. आकाश (शुक्र के पूर्व) ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

५. अश्विनी (ग्रह के उत्तर) ॐ यावां कशा मधु मत्य अश्विना सूनृतावती ।
तया यज्ञं मिमिक्षत स्वाहा ॥

- **दशदिक्पाल पूजनम्**

१. इन्द्र (मण्डल के पूर्व) ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

२. अग्नि (मण्डल के अग्नि) ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥

३. यम (मण्डल के दक्षिण) ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥

४. नैऋत्य (मण्डल के नैर्ऋत्य) ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ- सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

५. वरुण (मण्डल के पश्चिम) ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणे हबोध्युरूश ꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

६. वायु (मण्डल के वायव्य) ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्त्रिणी भिरुपया हियज्ञम् ।
वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

७. सोम (मण्डल के उत्तर) ॐ वय ꣳ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ।
प्रजावन्तः सचेमहि ॥

८. ईशान (मण्डल के ईशान) ॐ तमीशानं जगतस् तस्थु षस्पतिं धियञ्जिन्वम से हूमहे वयं ।
पूषानो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥

९. ब्रह्मा (ईशान - पूर्व) ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यश ꣳ सते स्तुवते धायि वज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः ॥

१०.अनन्त (नैर्ऋत्य - पश्चिम) ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः सर्मसप्रथाः ॥

॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां पूजनम् ॥

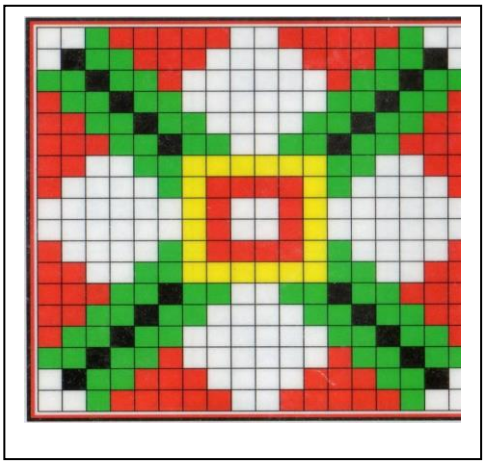

ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथाहस्त सुविस्तृतम् ।
इद्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् ।
अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

१. ॐ ब्रह्मणे नमः
२. सोमाय नमः
३. ईशानाय नमः
४. इन्द्राय नमः
५. अग्नये नमः
६. यमाय नमः
७. नैर्ऋतये नमः
८. वरुणाय नमः
९. वायवे नमः
१०. अष्टवसुभ्यो नमः
११. एकादश रुद्रेभ्यो नमः
१२. द्वादशादित्येभ्यो नमः
१३. अश्विभ्यां नमः
१४. सपैतृक-विश्वेदेव नमः
१५. सप्तयक्षेभ्यो नमः
१६. भूतनागेभ्यो नमः
१७. गन्धर्वाप्सेरोभ्यो नमः
१८. स्कंदाय नमः
१९. नन्दीश्वराय नमः
२०. शूलमहाकालाभ्यां नमः
२१. दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः
२२. दुर्गायै नमः
२३. विष्णवे नमः
२४. स्वधायै नमः
२५. मृत्यु रोगाभ्यां नमः
२६. गणपतये नमः
२७. अद्भ्यो नमः
२८. मरुदभ्यो नमः
२९. पृथिव्यै नमः
३०. गंगादि नंदीभ्यो नमः
३१. सप्तसागरेभ्यो नमः
३२. मेरवे नमः
३३. गदायै नमः
३४. त्रिशूलाय नमः
३५. वज्राय नमः
३६. शक्तये नमः
३७. दण्डाय नमः
३८. खड्गाय नमः
३९. पाशाय नमः
४०. अंकुशाय नमः
४१. गौतमाय नमः
४२. भरद्वाजाय नमः
४३. विश्वामित्राय नमः
४४. कश्यपाय नमः
४५. जमदग्नये नमः
४६. वसिष्ठाय नमः
४७. अत्रये नमः
४८. अरुन्धत्यै नमः
४९. ऐन्द्रै नमः
५०. कौमार्यै नमः
५१. ब्राह्मयै नमः
५२. वाराह्यै नमः
५३. चामुण्डायै नमः
५४. वैष्णव्यै नमः
५५. माहेश्वर्यै नमः
५६. वैनायक्यै नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः सर्वतोभद्र मण्डल देवताभ्यो नमः । सर्वतोभद्रम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

॥ पार्षदों का पूजन ॥

- नन्दीश्वर ध्यान

ॐ आयं गौः पृश्निर क्रमीदसदन् मातरं पुरः ।
पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

- ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा ।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥

- वीरभद्र ध्यान

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

- कार्तिकेय ध्यान

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥

- ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमाराः विशिखाःऽइव ।
तन्न इन्द्रो ब्रृहस्पति रदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

- कुबेर ध्यान

ॐ कुविदंग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥

- ॐ वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ।
प्रजावन्तः सचेमहि ॥

- कीर्तिमुख ध्यान

ॐ असवे स्वाहा, वसवे स्वाहा, विभुवे स्वाहा, विवस्वते स्वाहा,
गणश्रिये स्वाहा, गणपतये स्वाहा, ऽभिभुवे स्वाहा, ऽधिपतये स्वाहा,
शूषाय स्वाहा, सः सर्पाय स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा, ज्योतिषे स्वाहा,
मलिम्लुचाय स्वहा, दिवा पतयते स्वाहा ॥

- ॐ ओजश्चमे सहश्चम आत्माचमे तनूश्चमे शर्मचमे वर्मचमे अङ्गानिचमेऽ
स्थीनिचमे परु ७ षिचमे शरीराणिचम आयुश्चमे जराचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

- सर्प ध्यान

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।
ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

॥ शिव पूजन ॥

- शिव ध्यान

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृग वराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

- आह्वान

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

- **आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव ।**
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: आवाहनं समर्पयामि ॥ पुष्प चढायें ।

- आसन

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तावा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥

- **विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्भरनिवरसिने ।**
रत्नसिंहासनं चारो ददामि करुणानिधे ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: आसनार्थ पुष्पं समर्पयामि ॥ फूल चढायें ।

- पाद्य

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरि त्रतांकरु माहि ७ सी: पुरुषन् जगत ॥

- **गंगोदकम् निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।**
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रति गृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: पादयो: पाद्यं समर्पयामि ॥ चरणों में जल अर्पित करें।

- अर्घ्य

ॐ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथान: सर्वमिज् जगद यक्ष्य ७ सुमनाऽअसत् ॥

- **गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्त अर्घ्यं सम्पादितं मया ।**
गृहाण भगवन् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: हस्तयोर्घ्य समर्पयामि ॥ अर्घ्य पात्र में गन्ध अक्षत पुष्प जल लेकर चढाव

- आचमन

ॐ अद्धयवो चदधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक ।
अहींश्च सर्वान् जभयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराची: परासुव ॥

- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: आचमनीयम जलं समर्पयामि ॥ छ: बार आचमन करावें ।

- स्नान

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत ब्रभु: सुमंगल: ।
ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता: सहस्त्रशो वैषा ꣳ हेड ईमहे ॥

- **मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।**
तदिदं कल्पिते देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: स्नानीयं जलं समर्पयामि ॥ जल चढायें ।

- दुग्ध स्नान

ॐ पय: पृथिव्याम् पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयोधा: ।
पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम ॥

- **कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।**
पावनं यज्ञ हेतुश्च पय: स्नानाय गृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: पय: स्नानं समर्पयामि ॥ दुध से स्नान करायें ।

- दधि स्नान

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन: ।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ꣳ षि तारिषत् ॥

- **पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।**
दध्यानितं मया देव स्ननार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: दधिस्नानं समर्पयामि ॥ दही से स्नान करायें ।

- घृत स्नान

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घिते श्रितो घृतम् वस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥

- **नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम् ।**
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: घृतस्नानम समर्पयामि ॥ घृत से स्नान करायें ।

- मधु स्नान

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव: । माद्धवीर्न: सन्त्वोषधी: ।
मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ꣳ रज:। मधु द्यौरस्तुन: पिता ।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्य:। माध्वीर्गावो भवन्तु न: ॥

- **पुष्प रेणु समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।**
तेज: पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: मधुस्नानं समर्पयामि ॥ मधु से स्नान करायें ।

- शर्करा स्नान

ॐ अपा ꣳ रसमुद् वयस ꣳ सूर्ये सन्त: ꣳ समाहितम ।
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय त्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।

- **इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।**
  मलापहारिका दिव्य स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शर्करा से स्नान करायें ।

- पंचामृत स्नान — **ॐ पंच नद्य: सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतस: ।**
  सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥
- **पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।**
  पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम पंचामृतस्नानं समर्पयामि ॥ पंचामृत से स्नान करायें ।

- गन्धोदक स्नान — **ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।**
  गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत: ॥
- **मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरू सम्भवम् ।**
  चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ गन्धोदक से स्नान करायें ।

- शुद्धोदक स्नान — **ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षो**
  रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥
- **शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम् ।**
  समर्पितं मया भक्त्या शुद्ध स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
  ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्ध जल से स्नान करायें ।

- महाभिषेक स्नान — रुद्रसूक्त / पुरसूक्त / लिङ्गाष्टक / तांडवस्तोत्र / शिवमहिम्न स्तोत्र / अष्टाध्यायी (नमक चमक सहित) अथवा यथा भावओर सामर्थ्य अनुसार महाअभिषेक करे ।

- वस्त्र — **ॐ असौ योव सर्पति नीलग्रीवो विलोहित: ।**
  उतैनं गोपा अदृश्रन् नदृश्रन् नुदहार्य: स दृष्टो मृडययति न: ॥
- **सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।**
  मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यतां ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥ वस्त्र चढायें ।

- यज्ञोपवित — **ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।**
  अथो ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नम ॥
- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।**
  आयुष्य मग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवित चढायें ।

- उपवस्त्र

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमा सदत्स्वः ।
वासोग्ने विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो ॥

- **उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।**
  भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः उपवस्त्रम् समर्पयामि ।

- सुगन्ध द्रव्य

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम ।
उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥

- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः सुगन्धं समर्पयामि ॥ भगवान को इत्र लगावे ।

- गंध / चंदन

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्तवमुभयो रात्न्यौर्ज्याम ।
याश्चते हस्तऽ इगषवः पराता भगवोवप ॥

- **श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।**
  विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः गन्धं समर्पयामि ॥ चन्दन उपलेपित करें ।

- भस्म

ॐ प्रसद्य भस्मना योनि मपश्च पृथिवीमग्ने ।
स ꣳ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥

- **सर्वपाप हरं भस्म दिव्य ज्योति समप्रभम् ।**
  सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः भस्मं समर्पयामि । भस्म अर्पित करें ।

- अक्षत

ॐ अक्क्षन्न मीमदन्त ह्यवप्रिया अधुषत ।
अस्तोषत स्वभा नवो विप्रा न्नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी ॥

- **अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।**
  मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः अक्षतान समर्पयामि ॥ अक्षत चढावें ।

- पुष्प

ॐ विज्जयन् धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां२ उत ।
अनेशन् नस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः ॥

- **ॐ मन्दार-पारिजाताद्यैः, अनेकैः कुसुमैः शुभैः।**
  पूजयामि शिवे, भक्तया, कमलायै नमो नमः।
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नमः पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पुष्प एवं पुष्पमाला चढायें ।

- बिल्वपत्र

ॐ नमो बिल्मिनेच कवचिनेच नमो व्वर्मिणेच वरूथिनेच
नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्यायच ॥

- **त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम ।**
  त्रिजन्मपाप संहारम् ऐक बिल्वं शिवार्पणम ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: बिल्वपत्रम् समर्पयामि ॥ विल्वपत्र समर्पित करें ।

- दुर्वा **ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुष:परुषस्परि ।**
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
- **दुर्वां कुरान् सुहरितान मृतान् मंगलप्रदान ।**
  आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: दुर्वाम् समर्पयामि ॥ दुर्वा चढायें ।

- **एकादश रुद्रपूजा**

१. **ॐ अघोराय नम:**
२. **ॐ पशुपतये नम:**
३. **ॐ शर्वाय नम:**
४. **ॐ विरूपाक्षाय नम:**
५. **ॐ विश्वरूपिणे नम:**
६. **ॐ त्र्यम्बकाय नम:**
७. **ॐ कपर्दिने नम:**
८. **ॐ भैरवाय नम:**
९. **ॐ शूलपाणये नम:**
१०. **ॐ ईशनाय नम:**
११. **ॐ महेश्वराय नम:**

- एकादश रुद्रान पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्ध अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

- **एकादश शक्तिपूजा**

१. **ॐ उमायै नम:**
२. **ॐ शंकर प्रियायै नम:**
३. **ॐ पार्वत्यै नम:**
४. **ॐ गौर्यै नम:**
५. **ॐ काल्यै नम:**
६. **ॐ कालिन्द्यै नम:**
७. **ॐ कोटर्यै नम:**
८. **ॐ विश्वधारिण्यै नम:**
९. **ॐ ह्रां नम:**
१०. **ॐ ह्रीं नम:**
११. **ॐ गंगा देव्यै नम:**

- एकादश शक्ति पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्ध अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

- आभुषण **ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो न: पृतन्यादप तंतमिद्धतं ।**
  वज्रेण तंतमिद्धतम । दुरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥
- **वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रूम मण्डितम् ।**
  पुष्प राग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: रत्नाभूषणं समर्पयामि ॥ आभुषण चढायें ।

- सौभाग्य द्रव्य **ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमान: ।**
  हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ꣳ सं परिपातु विश्वत: ॥

- **अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन्मेव च ।**
  अबीरेणर्चितो देव क्षत: शान्ति प्रयच्छमे ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥ परिमल द्रव्य चढायें ।

- सिन्दूर
  ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमिय: पतयन्ति यह्वा: ।
  घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभि: पिन्वमान: ॥
- **ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।**
  शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: सिन्दूरं समर्पयामि ॥ सिन्दूर समर्पित करें ।

- धुप
  ॐ या ते हेतीर्मीदुष्टम हस्ते बभूव ते धनु: ।
  तयास्मान् विश्व तस्त्व मयक्ष्मया परिभुज ॥
- **ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध: उत्तम: ।**
  आघ्रेय: सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमा महेश्वराभ्याम नम: धूपं आघ्रायामि । धूपबत्ती जलायें ।

- दीप
  ॐ परिते धन्वनो हेति रस्मान् वृणक्तु विश्वत: ।
  अथोयऽ इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहितम ॥
- **ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तम वाहिन्ना योजितम मया ।**
  दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य ति मिरापहम ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: दीपं दर्शयामि ॥ दीपक के उपर चावल चढायें ।

- नैवद्य
  ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे ।
  निशीर्य शल्यानां मुख शिवा न: सुमना भव ॥
- **शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च ।**
  आहारं भक्ष्य भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रति गृह्यताम ॥
- प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा ॥

- करोद्वर्तन
  ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम् ।
  करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ।

- ऋतुफल
  ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ ह स: ॥
- **इदं फलं मया देवि स्थापितम् पुरतस्तव ।**
  तेन मे सफला वाप्तिर् भवेत जन्मनि जन्मनि ॥
- ॐ उमामहेश्वराभ्याम नम: । ऋतुफलानि निवेदयामि । ऋतुफल चढायें ।

- ताम्बूल

ॐ नमस्त आयुधाया नातताय धृष्णवे ।
उमाभ्यां मुतते नमो बाहुभ्यान् तव धन्वने ॥

- **ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।**
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ उमा महेश्वराभ्याम नमः । मुख शुद्धयर्थे ताम्बूलं समर्पयामि ।

- दक्षिणा

ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥

- **हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।**
अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
- ॐ उमा महेश्वराभ्याम नमः । द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि ।

- नीराजंन

ॐ आ रात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदा ꣳ सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥

- **ॐ इद ꣳ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये ।**
आत्मसनि प्रजासनि पशुसति लोकसन्यभयसनि :।
अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत ॥
- **ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,**
वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता,
विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥
- **कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।**
सदा बसन्तं हृदया रबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

- स्तुति

वन्दे देव उमापतिं सुरुगुरु वन्दे जगत्कारणम
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम ।
वन्दे सूर्य शशांक वहिनयनं वन्चे मुकुन्दप्रियः
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवशंकरम ॥

- **आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहे ।**
पूजा ते विविधोपभोग रचना निद्रा समाधिस्थितिः ॥
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम् ॥

▪ अंगपूजा

१. ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ।
२. ॐ शंकराय नमः जंघे पूजयामि ।
३. ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि ।
४. ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ।
५. ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि ।
६. ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ।
७. ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ।
८. ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ।
९. ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ।
१०. ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ।
११. ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ।
१२. ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ।
१३. ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ।
१४. ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ।
१५. ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वांगे पूजयामि ।

- प्रत्येक बार गंध अक्षत पुष्प से सम्बन्धित अंग को स्पर्ष करें।

▪ अष्टपूजा

१. ॐ शर्वाय क्षिति मूर्तये नमः
२. ॐ भवाय जल मूर्तये नमः
३. ॐ रुद्राय अग्नि मूर्तये नमः
४. ॐ उग्राय वायु मूर्तये नमः
५. ॐ भीमाय आकाश मूर्तये नमः
६. ॐ ईशनाय सूर्य मूर्तये नमः
७. ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नमः
८. ॐ पशुपतये यजमान मूर्तये नमः।

- प्रत्येक बार गन्ध अक्षत पुष्प बिल्वपत्र अर्पित करें।

▪ गणजूजा

१. ॐ गणपतये नमः
२. ॐ कार्तिकेयाय नमः
३. ॐ पुष्पदन्ताय नमः
४. ॐ कपर्दिने नमः
५. ॐ भैरवाय नमः
६. ॐ शूलपाणये नमः
७. ॐ ईश्वराय नमः
८. ॐ दंडपाणये नमः
९. ॐ नन्दिने नमः
१०. ॐ महाकालाय नमः

- प्रत्येक बार गन्ध अक्षत पुष्प बिल्वपत्र अर्पित करें।

॥ अष्टोत्तरशत शिव नामावली ॥

- विनियोग ॐ अस्य श्री शिवाष्टोत्तर शत नाम मन्त्रस्य नारायण ऋषि । अनुष्टुप छन्दः । श्री सदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः । श्री साम्ब सदा शिव प्रीतये अष्टोत्तरशत नामभिः शिवपूजन विनियोगः ।
- ध्यान

शान्ताकारं शिखरशयनं नीलकण्ठं सुरेशं ।
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम् ।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

1. ॐ शिवाय नमः।
2. ॐ महेश्वराय नमः।
3. ॐ शंभवे नमः।
4. ॐ पिनाकिने नमः।
5. ॐ शशिशेखराय नमः।
6. ॐ वामदेवाय नमः।
7. ॐ विरूपाक्षाय नमः।
8. ॐ कपर्दिने नमः।
9. ॐ नीललोहिताय नमः।
10. ॐ शंकराय नमः।
11. ॐ शूलपाणये नमः।
12. ॐ खट्वांगिने नमः।
13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः।
14. ॐ शिपिविष्टाय नमः।
15. ॐ अंबिकानाथाय नमः।
16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः।
17. ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
18. ॐ भवाय नमः।
19. ॐ शर्वाय नमः।
20. ॐ त्रिलोकेशाय नमः।
21. ॐ शितिकण्ठाय नमः।
22. ॐ शिवा प्रियाय नमः।
23. ॐ उग्राय नमः।
24. ॐ कपालिने नमः।
25. ॐ कामारये नमः।
26. ॐ अन्धकासुरसृदनाय नमः।
27. ॐ गंगाधराय नमः।
28. ॐ ललाटाक्षाय नमः।
29. ॐ कालकालाय नमः।
30. ॐ कृपानिधये नमः।
31. ॐ भीमाय नमः।
32. ॐ परशुहस्ताय नमः।
33. ॐ मृगपाणये नमः।
34. ॐ जटाधराय नमः।
35. ॐ कैलाशवासिने नमः।
36. ॐ कवचिने नमः।
37. ॐ कठोराय नमः।
38. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः।
39. ॐ वृषांकाय नमः।
40. ॐ वृषभारूढाय नमः।
41. ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः।
42. ॐ सामप्रियाय नमः।
43. ॐ स्वरमयाय नमः।
44. ॐ त्रयीमूर्तये नमः।
45. ॐ अनीश्वराय नमः।
46. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
47. ॐ परमात्मने नमः।
48. ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः।
49. ॐ हविषे नमः।
50. ॐ यज्ञमयाय नमः।
51. ॐ सोमाय नमः।
52. ॐ पंचवक्त्राय नमः।
53. ॐ सदाशिवाय नमः।
54. ॐ विश्वेश्वराय नमः।
55. ॐ वीरभद्राय नमः।
56. ॐ गणनाथाय नमः।
57. ॐ प्रजापतये नमः।
58. ॐ हिरण्यरेतसे नमः।
59. ॐ दुर्धर्षाय नमः।
60. ॐ गिरीशाय नमः।
61. ॐ गिरिशाय नमः।
62. ॐ अनघाय नमः।
63. ॐ भुजंगभूषणाय नमः।
64. ॐ भर्गाय नमः।
65. ॐ गिरिधन्वने नमः।
66. ॐ गिरिप्रियाय नमः।
67. ॐ कृत्तिवाससे नमः।
68. ॐ पुरारातये नमः।
69. ॐ भगवते नमः।
70. ॐ प्रमथाधिपाय नमः।
71. ॐ मृत्युंजयाय नमः।
72. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः।
73. ॐ जगद्व्यापिने नमः।
74. ॐ जगद्गुरुवे नमः।
75. ॐ व्योमकेशाय नमः।
76. ॐ महासेनजनकाय नमः।
77. ॐ चारुविक्रमाय नमः।
78. ॐ रुद्राय नमः।
79. ॐ भूतपतये नमः।
80. ॐ स्थाणवे नमः।
81. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
82. ॐ दिगंबराय नमः।
83. ॐ अष्टमूर्तये नमः।
84. ॐ अनेकात्मने नमः।
85. ॐ सात्विकाय नमः।
86. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः।
87. ॐ शाश्वताय नमः।
88. ॐ खण्डपरशवे नमः।
89. ॐ अजाय नमः।
90. ॐ पाशविमोचकाय नमः।
91. ॐ मृडाय नमः।
92. ॐ पशुपतये नमः।
93. ॐ देवाय नमः।
94. ॐ महादेवाय नमः।
95. ॐ अव्ययाय नमः।
96. ॐ हरये नमः।
97. ॐ भगनेत्रभिदे नमः।
98. ॐ अव्यक्ताय नमः।
99. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः।
100. ॐ हराय नमः।
101. ॐ पूषदन्तभिदे नमः।
102. ॐ अव्यग्राय नमः।
103. ॐ सहस्राक्षाय नमः।
104. ॐ सहस्रपदे नमः।
105. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः।
106. ॐ अनन्ताय नमः।
107. ॐ तारकाय नमः।
108. ॐ परमेश्वराय नमः।

॥ पंचवक्त्र पूजन ॥

- पश्चिम वक्त्र (सद्योजातः) ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
  भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः ॥
  - ध्यान प्रालेयामर विन्दु कुन्द धवलं गोक्षीर फेनप्रभं
    भस्मा भ्यङ्ग मनङ्ग देह दहन ज्वालावली लोचनम् । ब्रह्मेन्द्राग्नि
    मरुदगणैः स्तुति परैरभ्यर्चितं योगिभिः
    र्वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥
  - शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवपदम् ।
    शुद्ध स्फटिक सङ्काशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ॥
  - फलश्रुति श्वेताक्षैः श्वेतपुष्पै पूजयेद हंसवाहनं सिद्धयन्ति सर्वकार्याणिः ।
- उत्तर वक्त्र (वामदेव) ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः ।
  कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः बलाय नमो
  बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥
  - ध्यान गौरं कुंकुम पिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डु गण्डस्थलं
    भ्रूविक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त कर्णोत्पलम् ।
    स्निग्धं बिम्बकलाधरं प्रहसितं नीलाल कालंकृतं
    वन्दे पूर्ण शशाङ्क मंडलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥
  - वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् ।
    अजन्मान मुमाकान्तं वन्देऽहं ह्यत्तर मुखम् ॥
  - फलश्रुति तुलसी शतपत्रैश्च पूजयेद् गरुडासनं ।
    सर्वदोष विनाशेन प्राप्नोति श्रिय-संपदाम् ।
- दक्षिण वक्त्र (अघोर) ॐ अघोरेभ्योऽ थ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः ।
  सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥
  - ध्यान ॐ कालाभ्र भ्रमराञ्जना चलनिभं व्यावृत पिङ्गेक्षणं,
    खण्डेन्दु द्वयमिश्रितां शुदशन प्रोद्भिन्न दंष्ट्रांकुरम् ।
    सर्पप्रोतकपालशक्ति सकलं व्याकीर्ण सच्छेखरं,
    वंदे दक्षिण मीश्वरस्य कुटिलं भ्रूभङ्ग रौद्रं मुखम् ॥१॥
  - नीलाभ्रवरणमोंकार मघोरं घोर दंष्ट्रकं ।
    दंष्ट्रा कराल मत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् ॥२॥
  - फल श्रुति नीलोत्पलैः करवीरैः पूजयेत् कूर्मसंस्थितं ।
    सर्वबाधा विनाशाय ज्ञान मोक्ष प्रसाधकं ॥

- पूर्व वक्त्र (तत्पुरुष) **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।**
  तन्नो रुद्र प्रचोदयात्॥
  - ध्यान **ॐ संवर्ताग्नितडित् प्रतप्त कनक प्रस्पर्द्धि तेजोऽरुणं,**
    गम्भीरस्मितनिः सृतोग्र दशनं प्रोद्भासिताम्राधरम्।
    बालेन्दुद्युति लोलपिङ्गल जटाभार प्रबद्धोरगं,
    वन्दे सिद्ध सुरा सुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥१॥
    - **बालार्क वर्ण मारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम्।**
      दिव्यं पिङ्ग जटाधारं वन्देऽहं पूर्व दिङ्मुखम्॥२॥
  - फल श्रुति **दूर्वांकुरैरर्कपुष्पैः पूजयेदश्ववाहनं आयुष्यं तत्र विशिष्ट फल दायकम्।**

- उर्ध्व वक्त्र (ईशान) **ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां**
  ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे ऽस्तु सदाशिवोम्॥
  - ध्यान **ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षड्त्रिं श तत्त्वाधिकं,**
    तस्मादुत्तर तत्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
    वन्दे तामस वर्जितेन मनसा सूक्ष्माति सूक्ष्मं परं,
    शान्तं पञ्चमीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥१॥
    - **ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजः पुञ्ज परायणम्।**
      अमृतस्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पंचमं मुखम्॥२॥
  - फल श्रुति **सोम्य मोक्षप्रदातारं पूजयेद् वृषवाहनम्।**

- पंचवक्त्र पूजन के उपरान्त भगवान की आरती एवं प्रदक्षिणा करें। तदनन्तर रुद्राभिषेक प्रारम्भ करे।
- जो लोग धारापात्र टाँगते हों, व अभिषेक से पूर्व **ॐ धारापात्राधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः।** गन्ध अक्षत पुष्प द्वारा धारापात्र की पुजा कर दें।

॥ रुद्राष्टाध्यायी ॥

॥ षडंग्न्यास ॥

- ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु।
  विश्वेदेवा सऽइह मादयंता मोंऽ३ प्रतिष्ठ ॥ ॥१॥ ॐ हृदयाय नमः।

- ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायती मुषासम्।
  यह्वा इव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥ ॥२॥ ॐ शिरसे स्वाहा।

- ॐ मूर्धानन्दिवो अरतिम् पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
  कवि ꣳ सम्राजमतिथिन् जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥ ॥३॥ ॐ शिखायै वषट्।

- ॐ मर्माणिते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
  उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ ॥४॥ ॐ कवचाय हुम्।

- ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुत विश्वतस्यात्।
  सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः ॥ ॥५॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।

- ॐ मानस्तोके तनये, मान-आयुषि, मानो-गोषु, मानो-अश्वेषु रीरिषः।
  मानोवीरा न्नुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ॥६॥ ॐ अस्त्रायफट्।

- ध्यानम्

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृग वराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

॥ प्रथम अध्याय - (१० श्लोक) ॥

- ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे,
  निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे,
  वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥ ॥ १ ॥
- गायत्री त्रिष्टुपब् जगत्य नुष्टुप पंक्त्यासह ।
  बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचिभि: शम्यन्तुत्वा ॥ ॥ २ ॥
- द्विपदायाश्चतुष्पदा स्त्रिपदायाश्च षट्पदा: ।
  विच्छन्दायाश्च सच्छन्दा: सूचीभि: शम्यन्तुत्वा ॥ ॥ ३ ॥
- सहस्तोमा: सहच्छन्दस ऽ आवृत: सहप्रमा ऽ ऋषय: सप्त दैव्या: ।
  पूर्व्वेषाम्पन्था मनुदृश्यधीराऽ अन्वालेभिरे रत्थ्योनरश्म्मीन ॥ ॥ ४ ॥

॥ प्रथम अध्याय - (अंतिम ६ श्लोक) - शिव संकल्प सूक्त (गणेश) - हृदय रूपी अंग है । ॥

- यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन् तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
  दूरंगं मज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥ ५ ॥
- येन कर्मण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीरा: ।
  यदपूर्वं यक्षमन्त: प्रजानान् तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥ ६ ॥
- यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तर मृतम् प्रजासु ।
  यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥ ७ ॥
- येनेदम् भूतम् भुवनम् भविष्यत् परिगृहीत ममृतेन सर्वम् ।
  येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥ ८ ॥
- यस्मिन्नृच: साम यजू ꣳ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना भाविवारा: ।
  यस्मिंश्चित्त ꣳ सर्वमोतम् प्रजानान् तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥ ९ ॥
- सुषारथिरश्वा निवयन्मनुष्यान्ने नीयते भीशुभिर्वाजिनऽ इव ।
  हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठन् तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥ ॥१०॥

॥ द्वितीय अध्याय - (२२ श्लोक) - पुरुष सूक्त (विष्णु) - सर रूपी अंग है। ॥

- ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् ।
  स भूमि ꣳ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥ ॥ १ ॥

- पुरुषऽ एवद ꣳ सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम् ।
  उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥ ॥ २ ॥

- एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
  पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥ ॥ ३ ॥

- त्रिपाद्उर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
  ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥ ॥ ४ ॥

- ततोविराड् जायत विराजोऽ अधिपुरुषः ।
  सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥ ॥ ५ ॥

- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम् ।
  पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥ ॥ ६ ॥

- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
  छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत ॥ ॥ ७ ॥

- तस्मादश्वाऽ अजायन्त येकेचोभयादतः ।
  गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः ॥ ॥ ८ ॥

- तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः ।
  तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ॥ ९ ॥

- यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
  मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ ॥१०॥

- ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
  ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत ॥ ॥११॥

- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
  श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॥१२॥

- नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
  पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन् ॥ ॥१३॥

- यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
  वसन्तो ऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ ॥१४॥

- सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
  देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अबध्नन् पुरुषम् पशुम् ॥ ॥१५॥

- यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॥१६॥

॥ द्वितीय अध्याय - (अंतिम ६ श्लोक) - उत्तर नारायण सूक्त - आत्मा रूप तृतीय अंग है। ॥

- अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्ततग्रे ।
  तस्य त्वष्टा विदधद्रूप मेतितन् मर्त्यस्य देवत्व माजानमग्रे ॥ ॥१७॥

- वेदाहमेतं पुरुषं महान्त मादित्यवर्णन् तमसः परस्तात् ।
  तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ ॥१८॥

- प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजाय मानो बहुधा विजायते ।
  तस्य योनिम् परि पश्यन्ति धीरा स्तस्मिन् हतस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ ॥१९॥

- यो देवेभ्य आतपति यो देवानाम् पुरोहितः ।
  पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ ॥२०॥

- रुचम् ब्राह्मन् जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
  यस्त्वैवम् ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे ॥ ॥२१॥

- श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
  इष्णन् निषाणा मुम् मइषाण सर्वलोकम् मइषाण ॥ ॥२२॥

॥ तृतीय अध्याय - (१७ श्लोक) - अप्रतिरथ सूक्त (इंद्र) - कवच रूप चतुर्थ अंग है । ॥

- आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
  संक्रन्दनोऽ निमिष एकवीरः शत ꣳ सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥ ॥ १ ॥

- संक्रन्दनेना निमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
  तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ ॥ २ ॥

- सइषु हस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशीस ꣳ स्रष्टा सयुध इन्द्रो गणेन ।
  स ꣳ सृष्ट जित्सोमपा बाहु शर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ॥ ३ ॥

- बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ अपबाधमानः ।
  प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माक मेध्यविता रथानाम् ॥ ॥ ४ ॥

- बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वा जीसह मानउग्रः ।
  अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ ॥ ५ ॥

- गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्त मज्म प्प्रमृणन्त मोजसा ।
  इम ꣳ सजाता अनुवीर यध्व मिन्द्र ꣳ सखायो अनु स ꣳ रभध्वम् ॥ ॥ ६ ॥

- अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽ दयोवीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
  दुश्च्यवनः पृतनाषाड युध्योऽस्माक ꣳ सेना अवतु प्रयुत्सु ॥ ॥ ७ ॥

- इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
  देवसेना नामभि भञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ॥ ८ ॥

- इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानाम् मरुता ꣳ शर्ध उग्रम् ।
  महामनसाम् भुवनच्च्यवानां घोषो देवानां जयता मुदस्थात् ॥ ॥ ९ ॥

- उद्धर्ष यमघवन्ना युधान्युत् सत्वनाम् मामकानाम् मना ꣳ सि ।
  उद्-वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ ॥१०॥

- अस्माक मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
  अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ२ उदेवा अवता हवेषु ॥ ॥११॥

- अमीषाञ्चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
  अभिप्रेहि निर्दह हृत्सुशोकै रन्धेनामित्रा स्तमसा सचन्ताम् ॥ ॥१२॥

- अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मस ँ शिते ।
  गच्छामित्रान् प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ॥ ॥१३॥

- प्रेता जयतानरऽ इन्द्रोवः शर्म यच्छतु ।
  उग्रावः सन्तु बाहवोऽ ना धृष्या यथासथ ॥ ॥१४॥

- असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यै तिन ओजसा स्पर्धमाना ।
  तांगू हत तमसा पव्रतेन यथामीऽ अन्योऽ अन्यन्न्जानन् ॥ ॥१५॥

- यत्रवाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव ।
  तन्नऽ इन्द्रो बृहस्पति रदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ ॥१६॥

- मर्माणिते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
  उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥ ॥१७॥

॥ चतुर्थ अध्याय - (१७ श्लोक) - मैत्रसूक्त (सूर्य) - नेत्र रूप पंचम अंग कहा गया है । ॥

- विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वविह्रुतम् ।
  वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥ ॥ १ ॥

- उदुत्यन् जातवेदसन् देवं वहन्ति केतवः ।
  दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ ॥ २ ॥

- येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तन् जनाँ२ अनु ।
  त्वं वरुण पश्यसि ॥ ॥ ३ ॥

- दैव्या वद्धर्व्यू आगत ँ रथेन सूर्य्यतव्चा ।
  मध्वायज्ञ ँ समञ्जाथे । तं प्रत्क्नथा यं वेनश्चित्रन् देवानाम ॥ ॥ ४ ॥

- तं प्रत्क्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिम् बर्हिषद ँ स्वर्विदम् ।
  प्रतीचीनं वृजनन् दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्त मनुयासु वर्धसे ॥ ॥ ५ ॥

- अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसो विमाने ।
  इममपा ँ संगमें सूर्यस्य शिशुन्नविप्रा मतिभीरिहन्ती ॥ ॥ ६ ॥

- चित्रन् देवाना मुदगादनी कञ्चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः ।
  आप्राद्यावा पृथ्वीऽ अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थु षश्च ॥ ॥ ७ ॥

- आनऽ इडाभिर्व्विदथेसु शस्ति विश्वानरः सवितादेवऽएतु ।
  अपियथा युवानो मत्सथानो व्विश्वन् जगदभि पित्वे मनीषा ॥ ॥ ८ ॥

- यदद्य कच्च व्वृत्र हन्नुदगाऽ अभिसूर्य्य ।
  सर्व्वन्तदिन्द्रते व्वशे ॥ ॥ ९ ॥

- तरणिर्विश्वदर्शतो जयोतिष् कृदसि सूर्य ।
  विश्वमाभा सिरोचनम ॥ ॥१०॥

- तत्सूर्य्यस्य देवत्वन् तन्महित्वम् मध्याकर्त्तो व्वितत ँ सञ्जभार ।
  यदेद युक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्म्मै ॥ ॥११॥

- तन्मित्रस्य वरुणस्या भिचक्षे सुर्य्यो रुपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
  अनन्त मन्य द्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्य द्धरितः सम्भरन्ति ॥ ॥१२॥

- बण्महाँ२ असि । सूर्य्यबडादित्य महाँ२ असि ।
  महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महाँ२ असि ॥ ॥१३॥

- बट सूर्य्य श्रवसामहाँ२ असि । सत्रा देवमहाँ२ असि ।
  मह्ना देवानाम सुर्य्यः पुरोहितो व्विभु ज्ज्योति रदाभ्यम् ॥ ॥१४॥

- श्रायन्तऽ इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
  वसू निजाते जनमान ओजसा प्रति भागन् न दीधिम ॥ ॥१५॥

- अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निर ँ हसः पिपृता निरवद्यात् ।
  तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ॥१६॥

- आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतम् मर्त्यञ्च ।
  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॥१७॥

॥ पंचम अध्याय - (६६ श्लोक) - शतरुद्रिय (रुद्र) - रुद्र के शतश: रुप वर्णित हैं । ॥

- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नम: । बाहुभ्या मुतते नम : ॥ ॥ १ ॥
- याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ।
  तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि ॥ ॥ २ ॥
- यामिषुङ्गिरि शन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
  शिवाङ्गिरि त्रतांकुरु माहि ꣳ सी: पुरुषञ्जगत् ॥ ॥ ३ ॥
- शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
  यथा न : सर्वमिज्जगद यक्ष्म ꣳ सुमनाऽ असत् ॥ ॥ ४ ॥
- अध्यवो चदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
  अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योधराची: परासुव ॥ ॥ ५ ॥
- असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत बभ्रु: सुमङ्गल: ।
  ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता: सहस्त्रशो वैषा ꣳ हेडऽ ईमहे ॥ ॥ ६ ॥
- असौ योव सर्पति नीलग्रीवो विलोहित: ।
  उतैनं गोपाऽ अदृश्रन् नदृश्रन् नुदहार्य: सदृष्टो मृडयाति न: ॥ ॥ ७ ॥
- नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।
  अथोयेऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेभ्यो करन्नम : ॥ ॥ ८ ॥
- प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्क्न्योर्ज्याम् ।
  याश्चते हस्तऽ इषव: पराता भगवो व्वप ॥ ॥ ९ ॥
- विज्यन्धनु: कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत ।
  अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधि: ॥ ॥१०॥
- याते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनु: ।
  तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ ॥११॥
- परिते धन्विनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वत: ।
  अथोयऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् ॥ ॥१२॥
- अवतत्त्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे ।
  निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवोन: सुमना भव ॥ ॥१३॥
- नमस्त ऽआयुधाया नातताय धृष्णवे ।
  उभाभ्या मुतते नमो बाहुभ्यान् तवधन्नवने ॥ ॥१४॥

- मानो महान्त मुतमानोऽ अर्ब्भकम्मान उक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ।
  मानोव्वधी: पितरम् मोतमातरम् मान: प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिष: ॥ ॥१५॥

- मानस्तोके तनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषु रीरिष: ।
  मानो वीरान्नुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्त: सदमित्त्वा हवामहे ॥ ॥१६॥

- नमोहिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्चपतये नमो,
  नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्य: पशूनाम्पतये नमो,
  नम: शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो,
  नमो हरिकेशायो पवीतिने पुष्टानाम्पतये-नमो ॥ ॥१७॥

- नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेऽ न्नानाम्पतये नमो,
  नमो भवस्यहेत्यै जगताम्पतये नमो,
  नमो रुद्राया तायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो,
  नम: सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमो ॥ ॥१८॥

- नमो रोहितायस्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमो,
  नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृता यौषधी नाम्पतये नमो,
  नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो,
  नमऽउच्चैर्घोषाया क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो ॥ ॥१९॥

- नम: कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो,
  नम: सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनी नाम्पतये नमो,
  नमो निषङ्गिणे ककुभायस्तेना नाम्पतये नमो,
  नमो निचेरवे परिचराया रण्या नाम्पतये नमो ॥ ॥२०॥

- नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायू नाम्पतये नमो,
  नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमो,
  नम: सृकायिब्भ्यो जिघा ꣳ सद्ब्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो,
  नमो ऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्ब्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नम: ॥ ॥२१॥

- नमऽउष्ण्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो,
  नमऽ इषुमद्ब्भ्यो धन्व्वायिब्भ्यश्च वो नमो,
  नमऽ आतन्व्वानेब्भ्य: प्रतिदधानेब्भ्यश्चवो नमो,
  नमऽ आयच्छद्ब्भ्यो ऽ स्यद्ब्भ्यश्चवो नमो ॥ ॥२२॥

- नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्धयद्भ्यश्चवो नमो,
  नम: स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चवो नमो,

नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्चवो नमो,
नम स्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्चवो नमो ॥ ॥२३॥

- नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्चवो नमो,
नमोऽ श्वेब्भ्योऽ श्वपतिब्भ्यश्च वो नमो,
नमऽ आव्व्याधिनीब्भ्यो व्विविद्धयन्तीब्भ्यश्चवो नमो,
नम उगणाब्भ्यस्तृ ꣳ हतीब्भ्यश्चवो नमो ॥ ॥२४॥
- नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्चवो नमो,
नमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रात पतिब्भ्यश्चवो नमो,
नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्चवो नमो,
नमो व्विरूपेब्भ्यो व्विश्वरुपेब्भ्यश्चवो नमो ॥ ॥२५॥
- नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्चवो नमो,
नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्चवो नमो,
नमः क्षत्तृब्भ्यः संग्रहीतृब्भ्यश्चवो नमो,
नमो महद्ब्भ्योऽ अर्ब्भकेब्भ्यश्चवो नमः ॥ ॥२६॥
- नम स्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्चवो नमो,
नमः कुलालेब्भ्यः कम्मरिब्भ्यश्चवो नमो,
नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्चवो नमो,
नमः श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्चवो नमो ॥ ॥२७॥
- नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्चवो नमो, नमो भवायच रुद्रायच
नमः शर्व्वाच पशुपतयेच नमो नीलग्रीवायच शितिकण्ठायच ॥ ॥२८॥
- नमः कपर्द्दिनेच व्व्युप्तकेशायच नमः सहस्राक्षायच शतधन्व्वनेच
नमो गिरिशायच शिपिविष्टायच नमो मीढुष्टमाय चेषुमतेच ॥ ॥२९॥
- नमो ह्रस्वायच व्वामनायच, नमो बृहतेच व्वर्षीयसेच,
नमो वृद्धायच सवृधेच, नमो ऽग्यायच प्रथमायच ॥ ॥३०॥
- नम ऽआशवेचा जिराजायच, नमः शीग्घ्रायच शीब्भ्यायच,
नम ऽऊम्म्र्यायचा वस्वन्न्यायच, नमो नादेयायच द्व्द्वीप्प्यायच ॥ ॥३१॥
- नमो जयेष्ठायच कनिष्ठायच, नमः पूर्व्वजायचा परजायच,
नमो मद्ध्यमायचा पगल्भायच, नमो जघन्न्यायच बुध्न्यायच ॥ ॥३२॥
- नमः सोब्भ्यायच प्रतिसर्य्यायच, नमो याम्म्यायच क्षेम्म्यायच,
नमः श्लोक्क्यायचा वसान्न्यायच, नम उर्व्वर्यायच खल्ल्यायच ॥ ॥३३॥

- नमो व्वन्न्यायच कक्ष्यायच, नमः श्रवायच प्रतिश्रवायच,
  नम आशुषेणायचा शुरथायच, नमः शूरायचा वभेदिनेच ॥ ॥३४॥
- नमो बिल्मिनेच कवचिनेच, नमो व्वर्मिणेच व्वरूथिनेच,
  नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच नमो दुन्दुब्भ्यायचा हनन्न्यायच ॥ ॥३५॥
- नमो धृष्णवेच प्रमृशायच, नमो निषङ्गिणे चेषुधिमतेच,
  नमस्तीक्ष्णेषवे चा युधिनेच, नमः स्वायुधायच सुधन्वनेच ॥ ॥३६॥
- नमः स्रुत्यायच पथ्यायच, नमः काट्टयायच नीप्प्यायच,
  नमः कुल्ल्यायच सरस्यायच, नमो नादेयायच व्वैशन्तायच ॥ ॥३७॥
- नमः कूप्प्यायचा वट्टयायच, नमो व्वीद्ध्र्यायचा तप्प्यायच,
  नमो मेग्घ्यायच व्विद्द्युत्यायच, नमो व्वर्ष्म्यायचा व्वर्ष्म्यायच ॥ ॥३८॥
- नमो व्वात्त्याय च रेष्म्म्यायच, नमो व्वास्तव्व्यायच व्वास्तुपायच,
  नमः सोमायच रुद्रायच, नमस्ताम्राय चा रुणायच ॥ ॥३९॥
- नमः शङ्गवेच पशुपतयेच, नम ऽउग्र्यायच भीमायच,
  नमो ऽग्रेव्वधायच दूरेवधायच, नमो हन्त्रेच हनीयसेच,
  नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यो नमस्ताराय ॥ ॥४०॥
- नमः शम्भवायच मयोभवायच, नमः शङ्करायच मयस्क्करायच,
  नमः शिवायच शिवतरायच ॥ ॥४१॥
- नमः पार्य्यायचा वार्य्यायच, नमः प्प्रत्तरणाय चोत्तरणायच,
  नम स्तीत्थ्र्यायच कूल्ल्यायच, नमः शष्प्यायच फेन्न्यायच ॥ ॥४२॥
- नमः सिकत्त्यायच प्प्रवाह्य्यायच, नमः कि ७ शिलाय चक्षयणायच,
  नमः कपर्द्दिनेच पुलस्तयेच, नम ऽइरिण्य्यायच प्प्रपत्थ्यायच ॥ ॥४३॥
- नमो व्व्रज्ज्यायच गोष्ठयायच, नमस्तल्प्प्यायच गेह्य्यायच,
  नमो हृदय्यायच निवेष्प्यायच, नमः काट्टयायच गह्वरेष्ठ्यायच ॥ ॥४४॥
- नमः शुष्क्यायच हरित्यायच, नमः पा ७ सव्व्यायच रजस्यायच,
  नमो लोप्प्याय चोलप्प्यायच, नमऽउव्व्र्यायच सूव्व्र्यायच ॥ ॥४५॥
- नमः पर्ण्यायच पर्ण्यशदायच, नमऽउद्गुरमाणायचा भिघ्नतेच,
  नमऽ आखिदतेच प्प्रखिदतेच, नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्ब्भ्यश्चवो नमो,
  नमोवः किरिकेब्भ्यो देवाना ७ हृदयेब्भ्यो, नमो व्विचिन्व्वत्केब्भ्यो,
  नमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो नमऽआनिर्हतेब्भ्यः ॥ ॥४६॥

- द्रापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्र नीललोहित ।
  आसाम् प्रजाना मेषाम्पशूनाम् माभेर्म्मारोङ्गोचनः किञ्चनाममत् ॥ ॥४७॥
- इमारुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्प्रभरा महेमतीः ।
  यथाशम सद्द्विपदे चतुष्पदे व्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽ अस्म्मिन्ननातुरम् ॥ ॥४८॥
- याते रुद्र शिवातनूः शिवा व्विश्वाहा भेषजी ।
  शिवारुतस्य भेषजी तयानो मृडजीवसे ॥ ॥४९॥
- परिनोरुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मति रघायोः ।
  अवस्थिरा मघवद्ब्भ्यस्तनुष्व मीड्ढवस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ॥५०॥
- मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव । परमेव्वृक्षऽ आयुधन्निधाय
  कृत्तिंव्वसानऽ आचरपिनाकम् बिब्भ्रदागहि ॥ ॥५१॥
- व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तुभगवः।
  यास्ते सहस्र ꣳ हेतयोऽ न्यमस्म्मन्निव पन्तुताः ॥ ॥५२॥
- सहस्राणि सहस्रशोबाह्वोस्तव हेतयः ।
  तासा मीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि ॥ ॥५३॥
- असङ्ख्याता सहस्राणि येरुद्राऽ अधिभूम्म्याम् ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५४॥
- अस्म्मिन्न महत्त्यर्ण्णवेऽ न्तरिक्षे भवाऽअधि ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५५॥
- नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ꣳ रुद्राऽ उपश्रिश्रिताः ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५६॥
- नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५७॥
- ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५८॥
- ये भूताना मधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥५९॥
- ये पथाम्पथि रक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्म्मसि ॥ ॥६०॥

- ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥ ॥६१॥
- येन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥ ॥६२॥
- यऽएतावन्तश्च्च भूया ꣳ सश्च्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे ।
  तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥ ॥६३॥
- नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषाम् व्वर्षमिषवः।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेब्भ्यो नमोऽ अस्तुतेनोऽ वन्तुतेनो मृडयन्तुते
  यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदद्धमः ॥ ॥६४॥
- नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषाम् वात इषवः ।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेब्भ्यो नमोऽ अस्तुतेनोऽ वन्तुतेनो मृडयन्तुते
  यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदद्धमः ॥ ॥६५॥
- नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न मिषवः।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेब्भ्यो नमोऽ अस्तुतेनोऽ वन्तुतेनो मृडयन्तुते
  यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदद्धमः ॥ ॥६६॥

॥ षष्ठ अध्याय - (८ श्लोक) - महच्छिर सूक्त (सोम) ॥

- ॐ वय ꣳ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः ।
  प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॥ १ ॥
- एषते रुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकया तञ्जुषस्व-
  स्वाहैषते रुद्रभाग आखुस्तेपशुः ॥ ॥ २ ॥
- अवरुद्रमदी मह्यदेवन् त्र्यम्बकम् ।
  यथानोवस्य सस्क्करद्यथानः श्रेयसस्क्करद्यथानो व्यवसाययात् ॥ ॥ ३ ॥
- भेषजमसि भेषजंगवेऽ श्वायपुरुषाय भेषजम् ।
  सुखम्मेषाय मेष्यै ॥ ॥ ४ ॥
- त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
  उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।
  त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पतिवेदनम् ।
  उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामुतः ॥ ॥ ५ ॥
- एतत्ते रुद्रा वसन्ते नपरो मूजवतो तीहि ।
  अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहि ꣳ सन्नः शिवोतीहि ॥ ॥ ६ ॥
- त्र्यायुषम् जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
  यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ ॥ ७ ॥
- शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मामा हि ꣳ सीः ।
  निवर्तया म्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीय्यय ॥ ॥ ८ ॥

॥ सप्तम अध्याय - (७ श्लोक) - जटा सूक्त (मरुत) ॥

- उग्रश्च भीमश्च, ध्वान्तश्च धुनिश्च,
  सासह्-वांश्चाभि युग्वाच विक्षिपः स्वाहा ॥ ॥ १ ॥
- अग्नि ꣳ हृदये नाशनि ꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिङ कृत्स्न हृदयेन भवंय्यक्ना ।
  शर्वम्मतस्ना भ्यामीशानम् मन्युना महादेवमन्तः
  पर्शव्येनोग्रन्देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शींगीनिको श्याभ्याम् ॥ ॥ २ ॥
- उग्रँल्लोहितेन मित्र ꣳ सौ व्रत्येन रुद्रन् दौर्व्रत्येनन्द्रम्-
  पक्रीडेन मरुतो बलेनसाद्ध्यान् प्रमुदा ।
  भवस्य कण्ठ्य ꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम् महादेवस्य-
  यकृच्छर्वस्य वनिष्ठु पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॥ ३ ॥
- लोमभ्यः स्वाहा-लोमभ्यः स्वाहा, त्वचे स्वाहा-त्वचे स्वाहा,
  लोहिताय स्वाहा-लोहिताय स्वाहा, मेदोब्भ्यः स्वाहा-मेदोब्भ्यः स्वाहा ।
  मा ꣳ सेब्भ्यः स्वाहा-मा ꣳ सेब्भ्यः स्वाहा,
  स्नावब्भ्यः स्वाहा-स्नावब्भ्यः स्वाहा, स्थब्भ्यः स्वाहा-स्थब्भ्यः स्वाहा,
  मजब्भ्य स्वाहा-मजब्भ्य स्वाहा, रेतसे स्वाहा, पायवे स्वाहा ॥ ॥ ४ ॥
- आयासाय स्वाहा, प्रायासाय स्वाहा, संयासाय स्वाहा,
  वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ।
  शुचे स्वाहा, शोचते स्वाहा, शोचमानाय स्वाहा, शोकाय स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥
- तपसे स्वाहा, तप्यते स्वाहा,
  तप्यमानाय स्वाहा, तप्ताय स्वाहा, घर्माय स्वाहा ।
  निष्कृत्यै स्वाहा, प्रायश्चित्त्यै स्वाहा, भेषजाय स्वाहा ॥ ॥ ६ ॥
- यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा, मृत्यवे स्वाहा ।
  ब्रह्मणे स्वाहा, ब्रह्महत्यायै स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा,
  द्यावा पृथिवीभ्याम् ꣳ स्वाहा ॥ ॥ ७ ॥

॥ अष्टम अध्याय - (२९ श्लोक) - चमकाध्याय (अग्नि) ॥

- ॐ वाजश्चमे प्रसवश्चमे, प्रयतिश्चमे प्रसितिश्चमे, धीतिश्चमे क्रतुश्चमे,
  स्वरश्चमे श्लोकश्चमे, श्रवश्चमे श्रुतिश्चमे,
  ज्योतिश्चमे स्वश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ १ ॥

- प्राणश्चमे पानश्चमे, व्यानश्चमे सुश्चमे, चित्तञ्चम आधीतञ्चमे,
  वाक्चमे मनश्चमे, चक्षुश्चमे श्रोत्रञ्चमे,
  दक्षश्चमे बलञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ २ ॥

- ओजश्चमे सहश्चम, आत्माचमे तनूश्चमे, शर्मचमे वर्मचमे,
  अङ्गानिचमे स्थीनिचमे, परु ꣳ षिचमे शरीराणिचम,
  आयुश्चमे जराचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ३ ॥

- ज्यैष्ठ्यञ्चम आधिपत्यञ्चमे, मन्न्युश्चमे भामश्चमे, मश्चमे म्भश्चमे,
  जेमाचमे महिमाचमे, वरिमाचमे प्रथिमाचमे, वर्षिमाचमे द्राघिमाचमे,
  वृद्धञ्चमे वृद्धिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ४ ॥ (न. १)

- सत्यञ्चमे श्रद्धाचमे, जगच्चमे धनञ्चमे, विश्वञ्चमे महश्चमे,
  क्रीडाचमे मोदश्चमे, जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे,
  सूक्तञ्चमे सुकृतञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ५ ॥

- ऋतञ्चमे मृतञ्चमे, यक्ष्मचमे नामयच्चमे, जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वञ्चमे,
  नमित्रञ्चमे भयञ्चमे, सुखञ्चमे शयनञ्चमे,
  सूषाश्चमे सुदिनञ्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ६ ॥

- यन्ताचमे धर्ताचमे, क्षेमश्चमे धृतिश्चमे, विश्वञ्चमे महश्चमे,
  संविच्चमे ज्ञात्रञ्चमे, सूश्चमे प्रसूश्चमे,
  सीरञ्चमे लयश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ७ ॥

- शञ्चमे मयश्चमे, प्रियश्चमे नुकामश्चमे, कामश्चमे सौमनसश्चमे,
  भगश्चमे द्रविणञ्चमे, भद्रञ्चमे श्रेयश्चमे,
  वसीयश्चमे यशश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ८ ॥ (न. २)

- उर्क्चमे सूनृताचमे, पयश्चमे रसश्चमे, घृतञ्चमे मधुचमे,
  सग्धिश्चमे सपीतिश्चमे, कृषिश्चमे वृष्टिश्चमे,
  जैत्रञ्चम औद्भिद्यञ्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥ ९ ॥

- रयिश्चमे रायश्चमे, पुष्टञ्चमे पुष्टिश्चमे, विभुचमे प्रभुचमे,
  पूर्णञ्चमे पूर्णतरञ्चमे, कुयवञ्चमे क्षितश्चमे,
  न्नञ्चमे क्षुच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१०॥
- वित्तञ्चमे वेद्यञ्चमे, भूतञ्चमे भविष्यच्चमे, सुगञ्चमे सुपथत्थ्यञ्चम,
  ऋद्धञ्चम ऋद्धिश्चमे, कृप्तञ्चमे कृप्तिश्चमे,
  मतिश्चमे सुमतिश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥११॥
- व्रीहयश्चमे यवाश्चमे, माषाश्चमे तिलाश्चमे, मुद्गाश्चमे खल्वाश्चमे,
  प्रियङ्गवश्चमे णवश्चमे, श्यामकाश्चमे नीवाराश्चमे,
  गोधूमाश्चमे मसूराश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१२॥ (न. ३)
- अश्माचमे मृत्तिकाचमे, गिरयश्चमे पर्वताश्चमे, सिकताश्चमे वनस्पतयश्चमे,
  हिरण्यञ्चमे यश्चमे श्यामञ्चमे, लोहञ्चमे सीसञ्चमे,
  त्रपुचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१३॥
- अग्निश्चम आपश्चमे, वीरुधश्चम ओषधयश्चमे, कृष्टपच्याश्चमे कृष्टपच्याश्चमे,
  ग्राम्याश्चमे पशवऽ आरण्याश्चमे, वित्तञ्चमे वित्तिश्चमे,
  भूतञ्चमे भूतिश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१४॥
- वसुचमे वसतिश्चमे, कर्मचमे शक्तिश्चमे र्थश्चम-
  एमश्चम इत्याचमे, गतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१५॥ (न. ४)
- अग्निश्चम इन्द्रश्चमे, सोमश्चम इन्द्रश्चमे, सविताचम इन्द्रश्चमे,
  सरस्वतीचम इन्द्रश्चमे, पूषाचम इन्द्रश्चमे,
  बृहस्पतिश्चम इन्द्रश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१६॥
- मित्रश्चम इन्द्रश्चमे, वरुणश्चम इन्द्रश्चमे, धाताचम इन्द्रश्चमे,
  त्वष्टाचम इन्द्रश्चमे, मरुतश्चम इन्द्रश्चमे,
  विश्वेचमेदेवा इन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१७॥
- पृथिवीश्चम इन्द्रश्चमे, न्तरिक्षञ्चम इन्द्रश्चमे, द्यौश्चम इन्द्रश्चमे,
  समाश्चम इन्द्रश्चमे, नक्षत्राणिचम इन्द्रश्चमे,
  दिशश्चम इन्द्रश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१८॥ (न. ५)
- अ ꣳशुश्चमे रश्मिश्चमे, दाब्भ्यश्चमे धिपतिश्चम, उपा ꣳशुश्चमे न्तर्यामश्चम,
  ऐन्द्रवायवश्चमे मैत्रावरुणश्चम, आश्विनश्चमे प्रतिप्रस्थानश्चमे
  शुक्रश्चमे मन्थीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥१९॥

- आग्रयणश्चमे वैश्वदेवश्चमे, ध्रुवश्चमे वैश्वानरश्चम, ऐन्द्राग्नश्चमे महावैश्वदेवश्चमे,
  मरुत्वतीयाश्चमे निष्क्केवल्यश्चमे, सावित्रश्चमे सारस्वतश्चमे,
  पात्क्नीवतश्चमे हारियोजनश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२०॥
- स्रुचश्चमे चमसाश्चमे, वायव्यानिचमे द्रोणकलशश्चमे,
  ग्रावाणश्चमे धिषवणेचमे, पूतभृच्चम आधवनीयश्चमे,
  वेदिश्चमे बर्हिश्चमे, वभृथश्चमे स्वगाकारश्चमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२१॥ (न. ६)
- अग्निश्चमे घर्मश्चमे वर्क्कश्चमे, सूर्यश्चमे प्राणश्चमे, स्वमेधश्चमे पृथिवीचमे,
  दितिश्चमे दितिश्चमे, द्यौश्चमे ङ्गुलयः-,
  शक्करयो दिशश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२२॥
- व्रतञ्चम ऋतवश्चमे तपश्चमे संवत्सरश्चमे होरात्रे ऊर्वष्ठीवे
  बृहद्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२३॥ (न. ७)
- एकाचमे तिस्रश्चमे तिस्त्रश्चमे, पञ्चचमे पञ्चचमे, सप्तचमे सप्तचमे,
  नवचमे नवचम, एकादशचम एकादशचमे, त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे,
  पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे, सप्तदशचमे सप्तदशचमे,
  नवदशचमे नवदशचम, एकवि ꣳ शतिश्चम एकवि ꣳ शतिश्चमे,
  त्रयोवि ꣳ शतिश्चमे - त्रयोवि ꣳ शतिश्चमे,
  पञ्चवि ꣳ शतिश्चमे - पञ्चवि ꣳ शतिश्चमे,
  सप्तवि ꣳ शतिश्चमे - सप्तवि ꣳ शतिश्चमे,
  नवावि ꣳ शतिश्चमे - नवावि ꣳ शतिश्चम,
  एकत्रि ꣳ शतिश्चम - एकत्रि ꣳ शतिश्चमे,
  त्रयस्त्रि ꣳ शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२४॥ (न. ८)
- चतस्रश्चमे ष्टौचमे ष्टौचमे, द्वादशचमे द्वादशचमे, षोडशचमे षोडशचमे,
  वि ꣳ शतिश्चमे - वि ꣳ शतिश्चमे,
  चतुर्व्वि ꣳ शतिश्चमे - चतुर्व्वि ꣳ शतिश्चमे,
  ष्टावि ꣳ शतिश्चमे - ष्टावि ꣳ शतिश्चमे,
  द्वात्रि ꣳ शतिश्चमे - द्वात्रि ꣳ शतिश्चमे,
  षट्त्रि ꣳ शतिश्चमे - षट्त्रि ꣳ शतिश्चमे,
  चत्वारि ꣳ शश्चमे - चत्वारि ꣳ शश्चमे,
  चतुश्चत्वारि ꣳ शतिश्चमे - चतुश्चत्वारि ꣳ शतिश्चमे,
  ष्टाचत्वारि ꣳ शश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२५॥ (न. ९)

- त्र्यविश्श्रमे त्र्यवीचमे, दित्यवाटचमे दित्यौहीचमे,
  पञ्चाविश्श्रमे पञ्चावीचमे, त्रिवत्सश्श्रमे त्रिवत्साचमे,
  तुर्य्यवाटचमे तुर्यौहीचमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२६॥
- पष्ठवाटचमे पष्ठौहीचम, उक्षाचमे व्वशाचम,
  ऋषभश्श्रमे व्वेहच्चमे, नड्वांश्श्रमे धेनुश्श्रमे, यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ॥२७॥ (न. १०)
- व्वाजाय स्वाहा, प्रसवाय स्वाहा, पिजाय स्वाहा,
  क्रतवे स्वाहा, व्वसवे स्वाहा, हर्प्पतये स्वाहा,
  ह्वेमुग्धाय स्वाहा, मुग्धायवैन ꣳ शिनाय स्वाहा,
  विन ꣳ शिन अन्त्याय नाय स्वाहान्, न्त्याय भौवनाय स्वाहा,
  भुवनस्यपतये स्वाहा, धिपतये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा ॥
  इयन्ते राणिमित्राय यन्तासि यमन ऊर्जेत्वा
  वृष्टयैत्वा प्रजानांत्वा धिपत्याय ॥ ॥२८॥
- आयुर्यज्ञेनकल्पतां, प्राणोयज्ञेनकल्पतां, चक्षुर्यज्ञेनकल्पतां,
  श्रोत्रंयज्ञेनकल्पतां, वाग्ग्यज्ञेनकल्पतां, मनोयज्ञेनकल्पतां,
  मात्मायज्ञेनकल्पतां, ब्रह्मायज्ञेनकल्पतां, ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्पतां,
  स्वर्य्यज्ञेनकल्पतां, पृष्ठंयज्ञेनकल्पतां, यज्ञोयज्ञेनकल्पताम् ॥
- स्तोमश्श्र यजुश्श्र ऋक्च सामच बृहच्च रथन्तरञ्च ॥
  स्वर्देवा अगन्मामृतात् अभुमप्रजापतेः प्रजा अभूम वेट्स्वाहा ॥ ॥२९॥ (न. ११)

॥ नवम अध्याय - (२४ श्लोक) - शान्त्यध्याय ॥

- ॐ ऋचं व्वाचम्प्रपद्ये मनोयजुः प्रपद्ये सामप्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये।
  व्वागोजः सहौजो मयि प्प्राणापानौ ॥ ॥ १ ॥
- यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वाति तृण्णम् बृहस्प्पतिर्म्मे तद्दधातु।
  शन्नो भवतु भुवनस्ययस्प्पतिः ॥ ॥ २ ॥
- भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि।
  धियो यो नः प्प्रचोदयात् ॥ ॥ ३ ॥
- कयानश्चित्रऽ आभुवदूती सदावृधः सखा।
  कया शचिष्ठया व्वृता ॥ ॥ ४ ॥
- कस्त्वा सत्योमदानाम्म ꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः।
  दृढा चिदा रुजे व्वसु ॥ ॥ ५ ॥
- अभीषुणः सखीना मविता जरितृणाम्।
  शतम्भवा स्यूतिभिः ॥ ॥ ६ ॥
- कयात्वन्नऽ ऊत्याभि प्प्रमन्दसे व्वृषन्।
  कयास्तो तृब्भ्यऽ आभर ॥ ॥ ७ ॥
- इन्द्रो व्विश्वस्य राजति।
  शन्नोऽ अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्प्पदे ॥ ॥ ८ ॥
- शन्नोमित्रः शम्व्वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा।
  शन्नऽ इन्द्रो बृहस्प्पति शन्नो व्विष्ण्णु रुरुक्क्रमः ॥ ॥ ९ ॥
- शन्नोव्वातः पवता ꣳ शन्नस् तपतुसूर्य्यः।
  शन्नः कनिक्क्रद देवः पर्ज्जन्न्योऽ अभिवर्षतु ॥ ॥१०॥
- अहा निशम्भवन्तुनः श ꣳ रात्रीः प्प्रति धीयताम्।
  शन्नऽ इन्द्राग्नी भवता मवोभिः शन्नऽ इन्द्रा वरुणा रात हव्व्या।
  शन्नऽ इन्द्रा पूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंय्योः ॥ ॥११॥
- शन्नो देवी रभिष्टृयऽ आपो भवन्तु पीतये।
  शंय्यो रभिस्र वन्तुनः ॥ ॥१२॥

- स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी ।
  यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः ॥ ॥१३॥
- आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽ ऊर्ज्जे दधातन ।
  महेरणाय चक्षसे ॥ ॥१४॥
- योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः ।
  उशतीरिव मातरः ॥ ॥१५॥
- तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
  आपोजनय था च नः ॥ ॥१६॥
- द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी, शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः,
  शान्तिः व्वनस्प्पतयः, शान्तिर्व्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिः,
  सर्व्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॥१७॥
- दृतेदृ ँ हमा मित्रस्यमा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
  मित्रस्या हञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे ।
  मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ ॥१८॥
- दृतेदृ ँ हमा । ज्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्या-
  सञ्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्यासम् ॥ ॥१९॥
- नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ अस्त्वर्च्चिषे ।
  अन्याँस्तेऽ अस्म्मत् तपन्तुहेतयः पावकोऽ अस्म्मब्भ्य ँ शिवोभव ॥ ॥२०॥
- नमस्तेऽअस्तु व्विद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे ।
  नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ ॥२१॥
- यतोयतः समीहसे ततोनोऽ अभयङ्कुरु ।
  शन्नः कुरु प्प्रजाब्भ्योऽ भयन्नः पशुब्भ्यः ॥ ॥२२॥
- सुमित्रियानऽ आपऽ ओषधयः ।
  सन्तु दुर्म्मित्रियास् तस्म्मै सन्तु योऽस्म्मान् द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्म्मः ॥ ॥२३॥
- तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ता च्छुक्रम मुच्चरत् ।
  पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शत ँ श्रृणुयामशरदः
  शतं प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च्च शरदः शतात् ॥२४॥

॥ दशम अध्याय - (१३ श्लोक) - स्वस्ति प्रार्थना मन्त्रा ॥

- ॐ स्वस्तिन इंद्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा: ।
  स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥ १ ॥
- पय: पृथिव्याम् पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा: ।
  पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम् ॥ ॥ २ ॥
- विष्णो रराट मसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: ।
  स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा ॥ ॥ ३ ॥
- अग्निर्देवता, वातोदेवता, सूर्योदेवता, चन्द्रमादेवता, वसवोदेवता,
  रुद्रादेवता, दित्यादेवता, मरुतोदेवता, विश्वेदेवादेवता,
  बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ॥ ॥ ४ ॥
- सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नम: ।
  भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नम: ॥ ॥ ५ ॥
- वामदेवाय नमो, ज्येष्ठाय नम:, श्रेष्ठाय नमो, रुद्राय नम:, कालाय नम:,
  कलविकरणाय नमो, बलविकरणाय नमो, बलाय नमो,
  बलप्रमथनाय नम:, सर्वभूतदमनाय नमो, मनोन्मनाय नम: ॥ ॥ ६ ॥
- अघोरेभ्योऽ थघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य: ।
  सर्वेभ्य: सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र रूपेभ्य: ॥ ॥ ७ ॥
- तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्र: प्रचोदयात् ॥ ॥ ८ ॥
- ईशान: सर्व विद्यानामीश्वर: सर्वभूतानाम् ।
  ब्रह्माधिपतिर् ब्रह्मणोऽधिपतिर् ब्रह्मा शिवोमे अस्तु सदाशिवोम् ॥ ॥ ९ ॥
- शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मा मा हि ꣳ सी: ।
  निवर्तयाम्यायुषेऽ न्नाद्याय प्रजननाय -
  रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीय्यय ॥ ॥१०॥
- ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्नऽ आसुव ॥ ॥११॥
- ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्ति: पृथिवी, शान्तिराप:, शान्तिरोषधय:,
  शान्ति: वनस्पतय:, शान्तिर्विश्वेदेवा:, शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:
  सर्व ꣳ शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति:, सा मा शान्तिरेधि ॥ ॥१२॥
- सर्वेषां वा एष वेदाना ꣳ रसो यत्साम-
  सर्व्वेषामेवैनमेतद् वेदाना ꣳ रसेना भिषिञ्चति ॥ ॥१३॥

  ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ सर्वारिष्टसुशान्ति:र्भवतु ॥

▪ उत्तर षडंग्न्यास

१. ॐ **मनोजूतिर्जुषता.....**	ॐ हृदयाय नमः।	४. ॐ **मर्माणिते .....**	ॐ कवचाय हुम्।
२. ॐ **अबोध्यग्निः .....**	ॐ शिरसे स्वाहा।	५. ॐ **विश्वतश्चक्षुरुत .....**	ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।
३. ॐ **मूर्धानन्दिवो .....**	ॐ शिखायै वषट्।	६. ॐ **मानस्तोके .....**	ॐ अस्त्रायफट्।

▪ **उत्तर पूजन** यदि मन्दिर इत्यादि प्रतिष्ठित मूर्ति हो तो उत्तर पूजन के अन्तर्गत स्नान कराकर पुष्पादि से श्रृंगार करे और उत्तरपूजन करके आरती करें।

- पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, उपवस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, पुष्पमाला, बिल्वपत्र, दुर्वा, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा सभी उपरोक्त मंत्रो द्वारा करें।

॥ आरती महादेव जी की ॥

- **जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा।**
  ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अद्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ १ ॥
- **एकानन, चतुरानन, पंचांनन राजे।**
  हंसासंन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ २ ॥
- **दोय भुज चार चतुर्भज, दस भुज अति सोहें।**
  तीनों रुप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ३ ॥
- **अक्षमाला, बनमाला, रुण्ड़माला धारी।**
  चंदन, मृदमग चन्दा, भाले शशिधारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ४ ॥
- **श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगें।**
  सनकादिक, ब्रम्हादिक, भूतादिक संगें ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ५ ॥
- **कर मध्य कमण्डल, चक्र त्रिशूल धरता।**
  जगकर्ता दुखहर्ता, जग पालन कर्ता ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ६ ॥
- **ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।**
  प्रणवाक्षर दौ मध्यें, ये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ७ ॥
- **काशीमें विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रम्हचारी।**
  नित उठी भोग लगावत, सेवत नर नारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ८ ॥
- **त्रिगुण स्वामिजी की आरती, जो कोई नर गावें।**
  कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावें ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥ ९ ॥
- **जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।**
  ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अद्धांगीधारा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा..... ॥१०॥

- पुष्पांजली

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

- ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे ।
समे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
- ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं
महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्वात् सार्वभौमः।
सार्वायुष आन्तादा परार्धात ।
पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो
मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्नगृहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इतिः ।
- ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहु रुत विश्वतस्पात ।
सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयंदेव एकः।
- नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- प्रदक्षिणा

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा ७ सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥

- प्रणाम

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

- कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥

- विशेषार्घ

रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
वरद-त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन फलदानेन फलदोस्तु सदा मम ।

- समर्पण

अनया पूजया श्री साम्बसदा शिव प्रीयताम् न मम ।
श्री साम्ब सदा शिवार्पणमस्तु ।

- क्षमा प्राथना

पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहिमां पार्वती नाथ सर्वपापहरो भव ॥

- **मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।**
  यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥
- **आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।**
  पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥
- **अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।**
  दासोऽ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
- **अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।**
  तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥

- दक्षिणा

ॐ यथोक्त गुण विशिष्ट तिथ्यादौ अद्य अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा, कृतस्य श्री रुद्राभिषेक कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च रुद्राभिषेक कर्तृकेभ्यो नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये ।

- रुद्राभिषेक कर्तृकाय अमुक गोत्राय, अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये ।

- अभिषेक

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

- विसर्जन

यान्तु देव-गणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकाम-समृद्धयर्थम् पुनरागमनाय च ॥

- **गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।**
  यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन ॥
- **प्रमादात कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।**
  स्मरणा देव तद्विष्णो : सम्मूर्ण स्यादिति श्रुत्ति : ॥
- **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु ।**
  न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
- ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।
- ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।

- आशिर्वाद

पुनस्त्वा ऽऽदित्या रुद्रा वसव: समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञै: ।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्या: सन्तु यजमानस्य कामा: ॥

- दीर्घायुस्त औषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥
- मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथा: ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव: ॥
- श्रीवर्चस्व मायुष्म मारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुबहु पुत्र लाभं शतशम्वतसरं दीर्घमायु : ॥

- तीर्थ ग्रहणम्

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम ।
शिवतीर्थोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

॥ रुद्रयाग हवन मन्त्राः ॥

- **प्रथम अध्याय** ॐ गणानान्त्वा..... स्वाहा
  - ॐ अम्बे ऽ अम्बिके..... स्वाहा
  - ॐ यज्जाग्रतो (६ श्लोक) ..... स्वाहा
- **द्वितीय अध्याय** ॐ सहस्त्रशीर्षा (१६ श्लोक) ..... स्वाहा
  - ॐ अद्भ्यः सम्भृतः (६ श्लोक) ..... स्वाहा
- **तृतीय अध्याय** ॐ आशुः शिशानो (१२ श्लोक) ..... स्वाहा
- **चतुर्थ अध्याय** ॐ विब्भ्राड् बृहत्पिबतु (१७ श्लोक) ... स्वाहा
- **पंचम अध्याय**

- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥
- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
  तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्तभिचाकशीहि स्वाहा ॥ ॥ २ ॥
- ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
  शिवाङ्गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ॥ ३ ॥
- ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि ।
  यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ॥ ४ ॥
- ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
  अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योधराचीः परासुव स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥
- ॐ असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ।
  ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषा हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ॥ ६ ॥
- ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
  उतैनं गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ॥ ७ ॥
- ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।
  अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः स्वाहा ॥ ॥ ८ ॥
- ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्क्र्योर्ज्याम् ।
  याश्च ते हस्तऽ इषवः पराता भगवो व्वप स्वाहा ॥ ॥ ९ ॥
- ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँ २ ऽउत ।
  अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥ ॥१०॥

- ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनु: ।
  तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥ ॥११॥
- ॐ परिते धन्विनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वत: ।
  अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥ ॥१२॥
- ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
  निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो न: सुमना भव स्वाहा ॥ ॥१३॥
- ॐ नमस्त ऽआयुधाया नातताय धृष्णवे ।
  उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने स्वाहा ॥ ॥१४॥
- ॐ मानो महान्तमुत मानोऽ अर्ब्भकम्मान उक्षन्तमुत मानऽ उक्षितम् ।
  मानो व्वधी: पितरम्मोत मातरम्मान: प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिष: स्वाहा ॥ ॥१५॥
- ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिष: ।
  मानो वीरान्नरुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्त: सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥१६॥
- ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमः स्वाहा ॥ ॥१७॥
- ॐ नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥१८॥
- ॐ नमः शष्पिञ्चराय त्विषीमते पथीनां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥१९॥
- ॐ नमो हरिकेशायो पवीतिने पुष्टानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२०॥
- ॐ नमो बभ्लुशाय विव्याधिनेऽन्नानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२१॥
- ॐ नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२२॥
- ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२३॥
- ॐ नमः सूतायाहन्त्याय वनानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२४॥
- ॐ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२५॥
- ॐ नमो भुवन्तये वारिवस्कृता यौषधीनाम् पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२६॥
- ॐ नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२७॥
- ॐ नम उच्चैर्घोषाया क्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो नमः स्वाहा ॥ ॥२८॥
- ॐ नमः कृत्स्नवीताय धावते सत्वनां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥२९॥
- ॐ नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३०॥
- ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभायस्ते नानाम् पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३१॥

- ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३२॥
- ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३३॥
- ॐ नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३४॥
- ॐ नमः सृकाविभ्यो जिघा ꣳ सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३५॥
- ॐ नमो ऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३६॥
- ॐ नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमः स्वाहा ॥ ॥३७॥
- ॐ नमः इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥३८॥
- ॐ नमः आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥३९॥
- ॐ नम आयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४०॥
- ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४१॥
- ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४२॥
- ॐ नमः शयानेब्भ्य आसीनेब्भ्यःश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४३॥
- ॐ नमः स्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४४॥
- ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४५॥
- ॐ नमो श्वेभ्योऽ श्वपतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४६॥
- ॐ नम आव्यधिनीभ्यो विविध्यन्ती भ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४७॥
- ॐ नम उगणाभ्यस्तृ ꣳ हतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ॥४८॥
- ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥४९॥
- ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५०॥
- ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५१॥
- ॐ नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५२॥
- ॐ नमः सेनाभ्यः सेननिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५३॥
- ॐ नमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५४॥
- ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५५॥
- ॐ नमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५६॥

- ॐ नम स्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५७॥
- ॐ नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५८॥
- ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥५९॥
- ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥६०॥
- ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥ ॥६१॥
- ॐ नमो भवायच रुद्रायच स्वाहा ॥ ॥६२॥
- ॐ नमः शर्वायच पशुपतयेच स्वाहा ॥ ॥६३॥
- ॐ नमो नीलग्रीवायच शितिकण्ठायच स्वाहा ॥ ॥६४॥
- ॐ नमः कपर्दिनेच व्युप्तकेशायच स्वाहा ॥ ॥६५॥
- ॐ नमः सहस्राक्षायच शतधन्वनेच स्वाहा ॥ ॥६६॥
- ॐ नमो गिरिशायच शिपिविष्टायच स्वाहा ॥ ॥६७॥
- ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमतेच स्वाहा ॥ ॥६८॥
- ॐ नमो ह्रस्वायच वामनायच स्वाहा ॥ ॥६९॥
- ॐ नमो बृहतेच वर्षीयसेच स्वाहा ॥ ॥७०॥
- ॐ नमो वृद्धायच सवृद्धेच स्वाहा ॥ ॥७१॥
- ॐ नमो ग्रायच प्रथमायच स्वाहा ॥ ॥७२॥
- ॐ नम आशवेचा जिरायच स्वाहा ॥ ॥७३॥
- ॐ नमः शीग्घ्याच शीभ्यायच स्वाहा ॥ ॥७४॥
- ॐ नमऽ ऊर्म्यायचा वस्वन्यायच स्वाहा ॥ ॥७५॥
- ॐ नमो नादेयायच द्वीप्यायच स्वाहा ॥ ॥७६॥
- ॐ नमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायच स्वाहा ॥ ॥७७॥
- ॐ नमः पूर्वजायचा परजायच स्वाहा ॥ ॥७८॥
- ॐ नमो मध्यमायचा पगल्भायच स्वाहा ॥ ॥७९॥
- ॐ नमो जघन्यायच बुध्नियायच स्वाहा ॥ ॥८०॥
- ॐ नमः सोभ्यायच प्रतिसर्यायच स्वाहा ॥ ॥८१॥

- ॐ नमो याम्यायच क्षेम्यायच स्वाहा ॥ ॥८२॥
- ॐ नमः श्लोक्यायचा वसान्यायच स्वाहा ॥ ॥८३॥
- ॐ नम उर्वर्यायच खल्यायच स्वाहा ॥ ॥८४॥
- ॐ नमो वन्यायच कक्ष्यायच स्वाहा ॥ ॥८५॥
- ॐ नमः श्रवायच प्रतिश्रवायच स्वाहा ॥ ॥८६॥
- ॐ नमऽ आशुषेणायचा शुरथायच स्वाहा ॥ ॥८७॥
- ॐ नमः शूरायचा वभेदिनेच स्वाहा ॥ ॥८८॥
- ॐ नमो बिल्मिनेच कवचिनेच स्वाहा ॥ ॥८९॥
- ॐ नमो वर्मिणेच वरूथिनेच स्वाहा ॥ ॥९०॥
- ॐ नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच स्वाहा ॥ ॥९१॥
- ॐ नमो दुन्दुभ्यायचा हनन्यायच स्वाहा ॥ ॥९२॥
- ॐ नमो धृष्णवेच प्रमृशायच स्वाहा ॥ ॥९३॥
- ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमतेच स्वाहा ॥ ॥९४॥
- ॐ नम स्तीक्ष्णेषवे चायुधिनेच स्वाहा ॥ ॥९५॥
- ॐ नमः स्वायुधायच सुधन्वने च स्वाहा ॥ ॥९६॥
- ॐ नमः स्रुत्यायच पथ्यायच स्वाहा ॥ ॥९७॥
- ॐ नमः काट्यायच नीप्यायच स्वाहा ॥ ॥९८॥
- ॐ नमः कुल्ल्यायच सरस्यायच स्वाहा ॥ ॥९९॥
- ॐ नमो नादेयायच वैशन्तायच स्वाहा ॥ ॥१००॥
- ॐ नमः कूप्यायचा वट्यायच स्वाहा ॥ ॥१०१॥
- ॐ नमो व्वीध्र्यायच तप्यायच स्वाहा ॥ ॥१०२॥
- ॐ नमो मेघ्यायच विद्युत्यायच स्वाहा ॥ ॥१०३॥
- ॐ नमो वर्ष्यायचा वर्ष्यायच स्वाहा ॥ ॥१०४॥
- ॐ नमो वात्याय च-रेष्म्मयायच स्वाहा ॥ ॥१०५॥
- ॐ नमो वास्तव्यायच वास्तुपायच स्वाहा ॥ ॥१०६॥

- ॐ नमः सोमायच रुद्रायच स्वाहा ॥ ॥१०७॥
- ॐ नमस्ताम्राय चा-रुणायच स्वाहा ॥ ॥१०८॥
- ॐ नमः शङ्गवेच पशुपतयेच स्वाहा ॥ ॥१०९॥
- ॐ नम उग्रायच भीमायच स्वाहा ॥ ॥११०॥
- ॐ नमो ग्रेवधायच दूरेवधायच स्वाहा ॥ ॥१११॥
- ॐ नमो हन्त्रेच हनीयसेच स्वाहा ॥ ॥११२॥
- ॐ नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो स्वाहा ॥ ॥११३॥
- ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥ ॥११४॥
- ॐ नमः शम्भवायच मयोभवायच स्वाहा ॥ ॥११५॥
- ॐ नमः शङ्करायच मयस्करायच स्वाहा ॥ ॥११६॥
- ॐ नमः शिवायच शिवतरायच स्वाहा ॥ ॥११७॥
- ॐ नमः पार्यायचा वार्यायच स्वाहा ॥ ॥११८॥
- ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणायच स्वाहा ॥ ॥११९॥
- ॐ नम स्तीर्थ्यायच कूल्यायच स्वाहा ॥ ॥१२०॥
- ॐ नमः शष्प्यायच फेन्यायच स्वाहा ॥ ॥१२१॥
- ॐ नमः सिकत्यायच प्रवाह्यायच स्वाहा ॥ ॥१२२॥
- ॐ नमः कि ७ शिलायच क्षयणायच स्वाहा ॥ ॥१२३॥
- ॐ नमः कपर्दिनेच पुलस्तयेच स्वाहा ॥ ॥१२४॥
- ॐ नम इरिण्यायच प्रपथ्यायच स्वाहा ॥ ॥१२५॥
- ॐ नमो व्रज्ज्यायच गोष्ठायच स्वाहा ॥ ॥१२६॥
- ॐ नमस्तल्प्यायच गेह्यायच स्वाहा ॥ ॥१२७॥
- ॐ नमो हृदय्यायच निवेष्प्यायच स्वाहा ॥ ॥१२८॥
- ॐ नमः काट्यायच गह्वरेष्ठायच स्वाहा ॥ ॥१२९॥
- ॐ नमः शुष्क्यायच हरित्यायच स्वाहा ॥ ॥१३०॥
- ॐ नमः पा ७ सव्यायच रजस्यायच स्वाहा ॥ ॥१३१॥

- ॐ नमो लोप्याय चोलप्यायच स्वाहा ॥ ॥१३२॥
- ॐ नम ऊर्व्यायच सूर्व्यायच स्वाहा ॥ ॥१३३॥
- ॐ नमः पर्ण्यायच पर्णशदायच स्वाहा ॥ ॥१३४॥
- ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चा-भिघ्नतेच स्वाहा ॥ ॥१३५॥
- ॐ नमऽ आखिदतेच प्रखिदतेच स्वाहा ॥ ॥१३६॥
- ॐ नमऽ इषकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ॥१३७॥
- ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ ॥१३८॥
- ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ ॥१३९॥
- ॐ नमो विक्षीणत्केभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ ॥१४०॥
- ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ ॥१४१॥
- ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र न्नीललोहित ।
  आसांप्रजानां मेषांपशूनां माभेर्मारोङ् मोचनः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥ ॥१४२॥
- ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरा महेमतिः ।
  यथाशम सद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे आस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ ॥१४३॥
- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाह भेषजी ।
  शिवा रुद्रस्य भेषजी तयानो मृड जीवसे स्वाहा ॥ ॥१४४॥
- ॐ परिनो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
  अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा ॥ ॥१४५॥
- ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमनाभव ।
  परमे व्रुक्ष आयुधन् निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं विभ्रदागहि स्वाहा ॥ ॥१४६॥
- ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।
  यास्ते सहस्र ७ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥ ॥१४७॥
- ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
  तासा मीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥ ॥१४८॥
- ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।
  तेषा ७ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१४९॥

- ॐ अस्मिन् महत्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५०॥
- ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवँरुद्रा उपश्रिताः ।
  तेषाँसहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५१॥
- ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५२॥
- ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ।
  तेषा ँसहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५३॥
- ॐ ये भूताना मधिपतयो विशिखा सः कपर्दिनः ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५४॥
- ॐ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयर्य्युधः ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५५॥
- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५६॥
- ॐ ये न्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५७॥
- ॐ य एतावन्तश्च भूया ँसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
  तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा ॥ ॥१५८॥
- ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिर्षवः।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेभ्यो नमोऽ अस्तुतेनो ऽवन्तुतेनो मृडयन्तुते यंद्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तेषां जम्भेदध्धमः स्वाहा ॥ ॥१५९॥
- ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां वातऽइषवः।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेभ्यो नमोऽ अस्तुतेनो ऽवन्तुतेनो मृडयन्तुते यंद्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तेषां जम्भेदध्धमः स्वाहा ॥ ॥१६०॥
- ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृतिव्यां येषां मन्नमिषवः।
  तेभ्यो दश-प्राचीर्, दश-दक्षिणा, दश-प्रतीचीर्, दशो-दीचीर्, दशोर्ध्वा ।
  तेभ्यो नमोऽ अस्तुतेनो ऽवन्तुतेनो मृडयन्तुते यंद्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तेषां जम्भेदध्धमः स्वाहा ॥ ॥१६१॥

- **षष्ठ अध्याय** ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ वय ꣳ सोम व्रते ..... (८ श्लोक - पाठमात्र)
- **सप्तम अध्याय** ॐ उग्रश्च भीमश्च ..... (७ श्लोक - पाठमात्र)
- **अष्टम अध्याय**
  - ॐ वाजश्चमे...१, प्राणश्चमे...२, ओजश्चमे...३, ज्यैष्ठंचमे...४ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ सत्यञ्चमे...५, ऋतञ्चमे...६, यन्ताचमे...७, शञ्चमे...८ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ उर्क्चमे...९, रयिश्चमे...१०, वित्तञ्चमे...११, व्रीहयश्चमे...१२ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ अश्माचमे...१३, अग्निश्चमे...१४, वसुचमे...१५ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ अग्निश्चम इन्द्रश्चमे...१६, मित्रश्चम...१७, पृथिवीश्चम...१८ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ अ ꣳ शुश्चमे...१९, आग्रयणश्चमे...२०, स्रुचश्चमे...२१ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमे...२२, व्रतञ्चमे...२३ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ एकाचमे...२४ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ चतस्रश्चमे...२५ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ त्र्यविश्चमे...२६, पष्ठवाटचमे...२७ ॥ स्वाहा ॥
  - ॐ वाजाय स्वाहा...२८, आयुर्यज्ञेनकल्पतां...२९ ॥ स्वाहा ॥
- **नवम अध्याय**
  - ॐ ऋचं व्वाचम्प्रपद्ये ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ १ ॥
  - यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषो ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ २ ॥
  - भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्व ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ३ ॥
  - कयानश्चित्र ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ४ ॥
  - कस्त्वा सत्योमदानाम्म ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥
  - अभीषुणः सखीना ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ६ ॥
  - कयात्वन्न ऊत्याभि ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ७ ॥
  - इन्द्रो व्विश्वस्य ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ८ ॥
  - शन्नोमित्रः शम्व्वरुणः ... ॥ स्वाहा ॥ ॥ ९ ॥

- शन्नोव्वातः पवता ७ शन्नस् तपतुसूर्य्यः .. ॥ स्वाहा ॥१०॥
- अहा निशम्भवन्तुनः श ७ रात्री: ... ॥ स्वाहा ॥ ॥११॥
- शन्नो देवी रभिष्टय ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१२॥
- स्योना पृथिविनो ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१३॥
- आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१४॥
- योवः शिवतमो रसस्तस्य ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१५॥
- तस्माऽ अरङ्गमामवो ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१६॥
- द्यौ: शान्ति रन्तरिक्ष ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१७॥
- दृतेदृ ७ हमा मित्रस्यमा ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१८॥
- दृतेदृ ७ हमा ज्ज्योक्ते ... ॥ स्वाहा ॥ ॥१९॥
- नमस्ते हरसे शोचिषे ... ॥ स्वाहा ॥ ॥२०॥
- नमस्तेऽ अस्तु व्विद्युते ... ॥ स्वाहा ॥ ॥२१॥
- यतोयतः समीहसे ... ॥ स्वाहा ॥ ॥२२॥
- सुमित्रियानऽ आपऽ ओषधयः ... ॥ स्वाहा ॥ ॥२३॥
- तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ता ... ॥ स्वाहा ॥ ॥२४॥

- **दशम अध्याय** ॐ सद्योजातम्... (१३ श्लोक - पाठमात्र)